नवम्बर-२०२५ ◆ वर्ष १४ ◆ अंक ०७ ◆ उदयपुर

ओ३म्

# सत्यार्थ सौरभ

मासिक
नवम्बर-२०२५

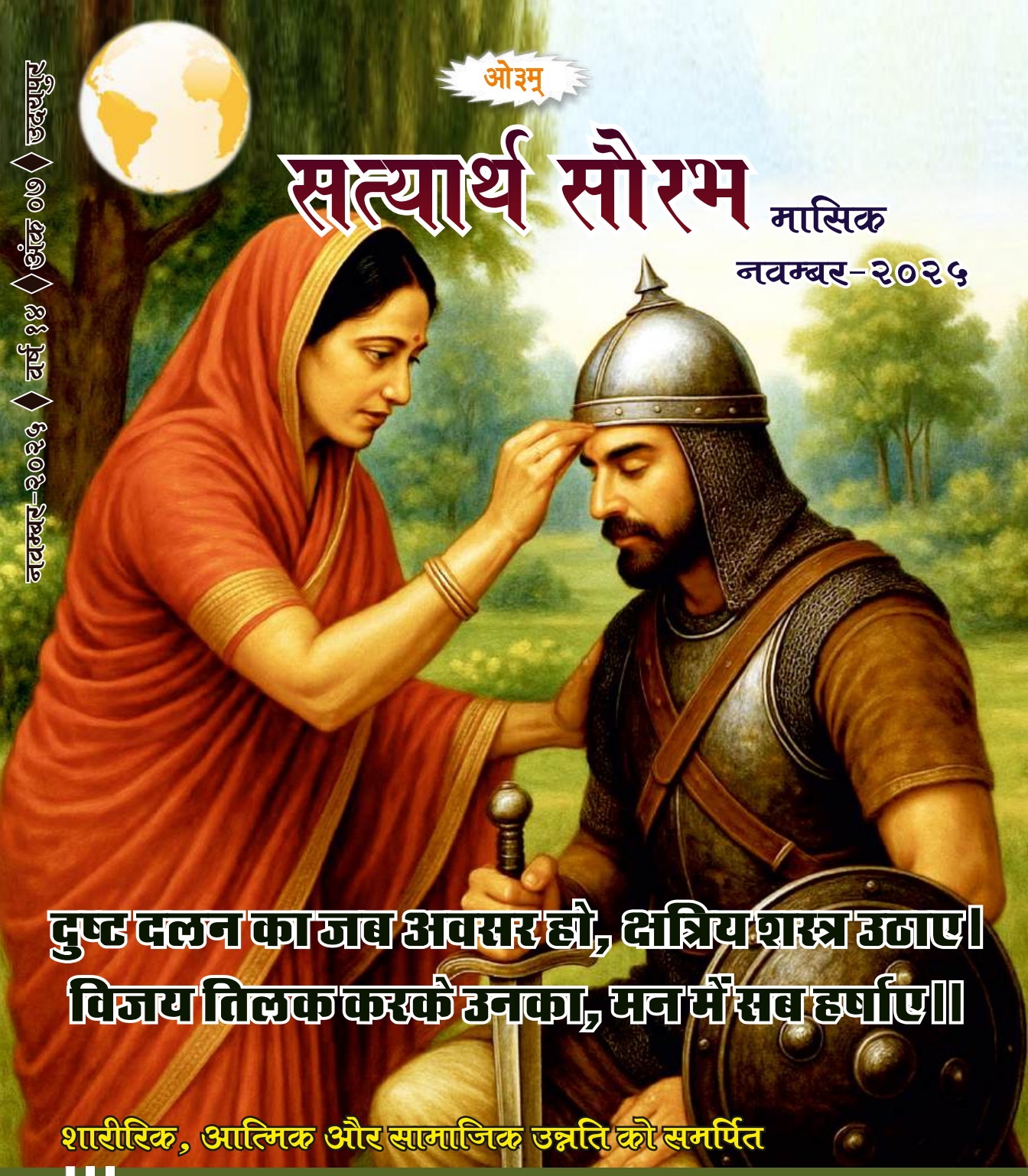

**दुष्ट दलन का जब अवसर हो, क्षत्रिय शस्त्र उठाए।**
**विजय तिलक करके उनका, मन में सब हर्षाए॥**

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १६६

# भारत के सरताज

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH मसाले

सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

**प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ**
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी ( अमेरिका )

**परामर्शदाता संपादक मण्डल**
डॉ. महावीर मीमाँसक
डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

**सम्पादक**
अशोक आर्य

**प्रबन्ध सम्पादक**
भवानी दास आर्य

**प्रबन्ध सहयोग ( ग्राफिक्स डिजाईनर )**
नवनीत आर्य ( मो. 9314535379 )

**व्यवस्थापक**
भँवर लाल गर्ग


| सहयोग ◆ | भारत | विदेश |
|---|---|---|
| संरक्षक | - 11000 रु. | $ 1250 |
| आजीवन | - 1500 रु. | $ 300 |
| पंचवर्षीय | - 600 रु. | $ 125 |
| वार्षिक | - 150 रु. | $ 30 |
| एक प्रति | - 15 रु. | $ 10 |

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२५
भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा
विक्रम संवत्
२०८२
दयानन्दाब्द
२०१

**November- 2025**


सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।



विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
5000 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

| | |
|---|---|
| पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 3000 रु. |
| आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 2000 रु. |
| चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 1000 रु. |





०६ नहीं खींची थी लक्ष्मण रेखा





१८ सद्धर्म वेद के प्रचार में मत-मतान्तरों की अविद्यायुक्त बातें बाधक



समाचार २९

| | |
|---|---|
| ०४ | वेद सुधा |
| १० | सत्यार्थ मित्र बनें |
| ११ | स्वभाव बदलते ही स्वर्ग हथेली में |
| १४ | भगवान बिरसा मुण्डा |
| १६ | क्यों फट रहे हैं- बादल? |
| २१ | धर्म |
| २५ | शरद ऋतु का आहार-विहार |
| २७ | कथा सरित- कहानी दयानन्द की |

हलचल ३०



**स्वामी** श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १४ | अंक -०७

**मुद्रण** द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

**प्रकाशक**
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

# वेद सुधा

**ओ३म् त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायतः।**
**न रिष्येत्त्वावतः सखा।।** - ऋग्वेद १/९१/८

**अन्वयः** – सोम राजन्! त्वं अघायतः नः विश्वतः रक्ष। त्वावतः सखा न रिष्येत्।

**अन्वयार्थः**– **(सोम राजन्)** हे शान्ति के अनुपम स्रोत और संसार के अद्वितीय सम्राट् परमेश्वर! **(त्वम् अघायतः नः विश्वतः रक्ष)** तुम पाप करना चाहने वाले से हमारी, सब ओर से रक्षा करो **(त्वावतः सखा न रिष्येत्)** तुझ सदृश रक्षक का सखा कभी हिंसित नहीं होता, कभी पीड़ित नहीं होता।

हे सौम्य गुणों से सम्पन्न परमेश्वर! संसार के दिव्य सम्राट् जगदीश्वर! बड़ी श्रद्धा और विश्वास के साथ सोत्साह हम तेरे द्वार पर आये हैं, तेरी शरण में आये हैं, तेरे चरणों में आये हैं और तुझ से प्रार्थना करते हैं, तुझ से याचना करते हैं, तुझ से विनय करते हैं कि तू हमारी सब ओर से रक्षा कर। रक्षा भी उससे कर, जो पाप का सदा इच्छुक रहता हो, हृदय से सदा पाप करना चाहता हो, पाप जिसके हृदय में घर कर गया हो, पाप जिसके भीतर समा गया हो और फिर वह धीरे-धीरे उसकी नस-नस में व्याप्त हो रहा हो, तथा वह अपनी पाप भावनाओं को कार्य रूप में परिणत करने को उद्यत रहता हो। जिसको फिर न अपने धर्म का विचार हो, न अपनी कुल-परम्परा का ध्यान हो और न ही अपनी गुरु-परम्परा का ख्याल हो, न अपने माँ-बाप की शर्म हो, न ही समाज में अपने मान-सम्मान का विचार हो, ऐसे निर्लज्ज बेशर्म, पापी जन से हे प्रभुवर! तू हमारी सब ओर से रक्षा कर, हमारी सब प्रकार से रक्षा कर।

ऐसा पापी जन, जिस की नस-नस पाप से अभिभूत हो जाती, ऐसा वह अति काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार,

ईर्ष्या और द्वेष आदि में अन्धा हुआ मानव जहाँ अपने आप को पाप के गर्त में गिरा कर अपना विनाश कर लेता है वहाँ वह अपने सम्पर्क से दूसरे को भी धूल में मिला देता है। स्वयं तो वह डूबता ही है, पर अपने साथ वाले को भी वह साथ ले डूबता है, स्वयं तो वह समाज में सब की दृष्टि में गिर जाता ही है पर साथ में दूसरे को भी घसीट लेता है, स्वयं तो वह बर्बाद होता ही है, पर दूसरे को भी वह अपने साथ बर्बाद कर देता है, तथा स्वयं तो वह अपना मुँह काला कर ही लेता है पर साथ में दूसरे को भी वह उज्ज्वल नहीं रहने देता, स्वयं तो वह कहीं का रहता ही नहीं, पर दूसरे को भी वह कहीं का रहने नहीं देता, इत्यादि।

ऐसे पापी जन के सहस्रों का धन लूट लेने पर भी, सहस्त्रों पर डाका डाल लेने पर भी उसके अपने घर में तो उजाला होता ही नहीं है पर हाँ जिसके घर में उजाला था उसका भी वह दीपक बुझा देता है। प्रभुदेव! ऐसे पापीजन से, ऐसे ही दुराचारी जन से, ऐसे ही हिंसक जन से, ऐसे ही क्रोध में आग-बबूला हुए पापी जन से, ऐसे लोभ में अन्धे होकर विवेक शून्य धर्माऽधर्म भूले हुए पापी जन से, पाप में पागल हुए पापी जन से, अहंकार में दूसरों को कुछ न समझने वाले पापी जन से, ईर्ष्या और द्वेष से सदा जलते-भुनते हुए कुछ का कुछ कर डालने वाले पापी जन से, तू हमारी रक्षा कर, तू हमें बचा।

हे जगत् पर शासन करने वाले, सत्पुरुषों के हृदयों में पवित्रता और आनन्द के स्रोत बहाने वाले परमेश्वर! हम

क्यों आप से प्रार्थना करते हैं? क्यों आप से याचना करते हैं? क्यों आप से विनय करते हैं? इसीलिए कि **(त्वावतः सखा न रिष्येत्)** तुझ समान रक्षक का मित्र कभी हिंसित नहीं होता, कभी पीड़ित नहीं होता ।

हे सोम राजन्! जो तुझ को अपना सखा बना लेता है वा तेरा स्वयं सखा बन जाता है, तुझ सम अपने गुण, कर्म, स्वभाव बना लेता है, तुझ सम अपने में सत्य और न्याय आदि को धारण कर लेता है फिर वह तेरा अपना ही बन जाता है और तू उसका बन जाता है। तब वह न तुझ बिन कभी रह पाता है और न तू उन बिन रह पाता है। **ऐसे तुझ समर्थ का सहयोग पाने पर, तुझ सशक्त का संरक्षण पाने पर, तुझ बलिष्ठ का बल पाने पर, तुझ ज्ञानी का ज्ञान पाने पर, तुझ प्यारे का प्यार पाने पर, भला फिर किस की हिम्मत है जो उसको सन्तप्त कर सके।** फिर भला किसकी क्या मजाल जो कुछ हानि कर सके, उसको दुःखी कर सके, उसको पीड़ा पहुँचा उसको अपने लक्ष्य से, अपने उद्देश्य से अपनी पवित्रता से न्याय से सत्पथ से च्युत कर सके। क्योंकि तब वह तो अपने सखा जगत् सम्राट् के संरक्षण में रहता है जिस के संरक्षण में जाने पर फिर कोई उस का कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

**"जाको राखे साईयां मार सके न कोय।"**

वह भी फिर सब प्रकार से निर्भय हो जाता है, निडर हो जाता है क्योंकि उसने तो उसकी शरण ली है जो राजाओं का राजा है, उसने तो उससे रक्षण-संरक्षण की प्रार्थना की है जिससे सब घबराते हैं, सब थर्राते हैं। उसने उस प्रभु से रक्षा की याचना की है, जो रक्षकों का भी रक्षक है, उसने तो उस देव से भिक्षा माँगी है जो दाताओं का भी दाता है उसने तो उसकी शरण ली है जो शरण्यों की भी शरण है।

प्रभु! इस आशा और विश्वास पर हम तुझ से प्रार्थना कर रहे हैं, तुझ को पुकार रहे हैं, तुझ को एक टक निहार रहे हैं कि तू हम पर भी अपना अनुग्रह करे।

**लेखक- वेदरत्न प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार**
**सम्पादक- आचार्य ब्रह्मचारी नन्दकिशोर**
**साभार- वैदिक प्रार्थना-सौरभ**

❑❑❑

## संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत, डॉ. बी.पी. भटनागर; उदयपुर, डॉ. अवन्त कुमार सचेती; उदयपुर, श्री अरुण अब्रोल; मुम्बई

आत्म निवेदन

# नहीं खींची थी लक्ष्मण रेखा

नवलखा महल संस्कृतिक केन्द्र उदयपुर में हमने श्रीराम के जीवन-चरित्र को एक कक्ष समर्पित किया है, जिसमें २० चित्रों के माध्यम से भगवान श्रीराम के जीवन से सम्बन्धित प्रमुख घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है। इसे देखने के बाद और समझने के पश्चात् प्रायः युवा साथी इस बात को कहते हैं कि आज हमने रामायण के 'तथ्यों' को जाना है अभी तक तो हमें जो टीवी आदि पर दिखाया था केवल उसको ही जानते थे। आज जो देखा वह logical है।

आप यह सोच सकते हैं क्या फर्क पड़ता है? थोड़ी बहुत घटनाएँ इधर-उधर की बता दीं तो उससे क्या फर्क पड़ता है? यह बात ठीक नहीं है। **प्रक्षेपों से इतिहास अपना स्वरूप खो देता है, अपनी अन्तर्निहित प्रेरणा देने की शक्ति खो देता है, सत्य के साथ मिश्रित होकर के प्रभावहीन हो जाता है।** और जब यह प्रक्षेप की परम्परा चलती है तो फिर कोई हाथ रुकता नहीं है जिसके जो मन में आता है वह वैसा प्रक्षेप कर देता है। फलस्वरूप तथाकथित बुद्धिजीवी बजाय इसके कि सत्य का अन्वेषण करें इस स्वर्णिम इतिहास को 'मिथ' की श्रेणी में धकेलने में एक मिनट का समय भी नहीं लगाते। क्योंकि भारत का उज्ज्वल इतिहास उन्हें परेशान करता है। आप क्या सोचते हैं २००७ में जब कोर्ट में एक एफिडेविट देकर के यह कहा गया कि श्री राम कोई वास्तविक रूप में नहीं हुए थे तो इसकी पृष्ठभूमि यूँ ही बन गई थी? जी नहीं। देखिए-

सितम्बर २००७ में कांग्रेस नेतृत्व वाली UPA सरकार ने रामसेतु (Sethusamudram Project) मामले में सुप्रीम कोर्ट में एक एफिडेविट दाखिल किया। इसमें कहा गया था कि- "There is no historical or scientific evidence to establish the existence of Lord Ram or the events of Ramayana." (अर्थात्- भगवान राम अथवा रामायण की घटनाओं के अस्तित्व को सिद्ध करने वाला कोई ऐतिहासिक या वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है।) यद्यपि बाद में जब विवाद बढ़ा तो उन्होंने इसमें आंशिक संशोधन कर दिया। हम यह मानते हैं कि दोष केवल उनका नहीं है। **जिस प्रक्षिप्त इतिहास को हम गले लगाए हुए हैं उसको पढ़, देखकर के कोई भी यह कह देगा यह उपन्यास है, किसी की कल्पना है। आखिर जब आप यह कहेंगे कि श्री**

**हनुमान के पसीने को एक मछली निगल गई और उससे मकरध्वज पैदा हुआ तो फिर कोई क्या कहेगा, बताइए?** इसलिए अत्यन्त आवश्यक है कि अपने स्वर्णिम इतिहास को जन-जन तक सही रूप में पहुँचाने का हम भरसक प्रयास करें; और इससे पहले आवश्यक है उसके शुद्ध स्वरूप को संरक्षित करें। अब प्रश्न उठता है कि क्या इन प्रक्षिप्त अंशों को पहचानना बहुत कठिन है? जी नहीं।

सत्य को पहचानने की, उसकी परीक्षा करने की जो कसौटियाँ सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द जी महाराज ने दी हैं अगर हम सावधानी पूर्वक उनका प्रयोग करें तो बड़ी हद तक प्रक्षिप्त अंशों को पहचान सकते हैं। ये कसोटियाँ हैं-

एक- जो-जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव और वेदों से अनुकूल हो, वह-वह 'सत्य' और उससे विरुद्ध 'असत्य' है।

दूसरी- जो-जो सृष्टिक्रम से अनुकूल वह-वह 'सत्य' और जो-जो विरुद्ध है, वह सब 'असत्य' है। जो कोई कहै- 'विना माता-पिता के योग से लड़का उत्पन्न हुआ', वह सृष्टिक्रम से विरुद्ध होने से असत्य है।

तीसरी- 'आप्त' अर्थात् जो धार्मिक, विद्वान्, सत्यवादी, निष्कपटियों का संग, उपदेश के अनुकूल है, वह-वह 'ग्राह्य' और जो-जो विरुद्ध है, वह-वह 'अग्राह्य' है।

चौथी- अपने आत्मा की पवित्रता, विद्या के अनुकूल, अर्थात् जैसा अपने को सुख प्रिय और दुःख अप्रिय है, वैसे सर्वत्र समझ लेना कि मैं भी किसी को दुःख वा सुख दूँगा, तो वह भी अप्रसन्न और प्रसन्न होगा।

और पाँचवीं- आठों प्रमाण अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव। इन कसौटियों पर कस कर देखिये तो सही।

यदि वाल्मीकि रामायण की बात करें तो महर्षि वाल्मीकि की लेखन शैली और लेखक के रूप में उनका महनीय व्यक्तित्व किस प्रकार के प्रकरण में किन शब्दों का प्रयोग करेगा वह सब ध्यान रखना भी प्रक्षेप को पहचानने में सहायक है।

यहाँ हम उदाहरण के रूप में दो श्लोक दे रहे हैं जो कि रामायण के अरण्यकाण्ड के ४६ वे सर्ग से हैं। इसमें आप देखेंगे कि रावण जिस समय साधु का वेश बनाकर सीता जी का अपहरण करने आता है उस समय वह सीता जी का नख-शिख वर्णन उन्हीं को सुनाता है। अब तनिक भी विचार करेंगे तो पता चलेगा प्रथम तो उन श्लोकों में जिनमें से हम दो को नीचे उद्धृत कर रहे हैं इतना अश्लील वर्णन है, जो वाल्मीकि जैसे महर्षि की लेखनी से प्रसूत हो ही नहीं सकता और दूसरे सीता उन सब बातों को सुनकर के भी क्या नहीं समझ पाई थीं कि यह व्यक्ति कोई साधु नहीं है? कोई साधु कैसे किसी स्त्री से ऐसे वचन बोल सकता है? कल्पना कीजिए कि किसी घर में कोई अतिथि आए और महिला जब दरवाजा खोले तो वह तथाकथित अतिथि उससे इस तरह की बातें करे जैसी कि इन श्लोकों में है तो क्या गृहस्वामिनी अतिथि के मुँह पर दरवाजा बन्द नहीं कर देगी? क्या उसको फिर भी अन्दर बुला करके भोजन करायेगी? बिल्कुल नहीं। निश्चित रूप से अगर ये श्लोक प्रक्षिप्त नहीं हैं तो फिर सीता पहले ही सावचेत हो जातीं। अतः हमारी सम्मति में वास्तविक स्थिति यही है कि ये और इस तरह के श्लोक प्रक्षिप्त हैं। आप स्वयं विचार कीजिए। यद्यपि नीचे उद्धृत किए जा रहे श्लोक इस प्रकार के हैं कि लिखने का मन नहीं करता परन्तु उन्हें उद्धृत किए बिना जो हम कहना चाह रहे हैं उसको हम स्थापित भी नहीं कर पाएँगे। इसी कारण हम यहाँ श्लोक मात्र दे रहे हैं।

**समाः शिखरिणः स्निग्धाः पाण्डुरा दशनास्तव।**
**विशाले विमले नेत्रे रक्तान्ते कृष्णतारके॥ - १७**

**विशालं जघनं पीनमूरू करिकरोपमौ।**
**एतावुपचितौ वृत्तौ संहतौ सम्प्रगल्भितौ।।** - १८
**पीनोन्नतमुखौ कान्तौ स्निग्धतालफलोपमौ।**
**मणिप्रवेकाभरणौ रुचिरौ ते पयोधरौ।।** - वा.रा. अरण्यकाण्ड ४६/१६

इन श्लोकों का अर्थ आप रामायण में देख लीजिये।

सम्पूर्ण रामायण का विश्लेषण करने पर प्रक्षेपों की भरमार दिखती है पर इस आलेख में हम अपने को 'लक्ष्मण रेखा' प्रकरण तक सीमित रखेंगे और इसी सन्दर्भ में प्रक्षेप की पुष्टि भी करेंगे।

टेलीविजन व अन्य माध्यमों से जो रामायण लोगों के सामने आई है उसमें देखने को मिलता है कि माता सीता के प्रबल आग्रह पर हिरण को पकड़ने श्री राम वन को चल देते हैं। यहाँ यह ध्यान में रखें कि लक्ष्मण पहले ही श्रीराम को कह चुके थे कि यह राक्षसी माया है पर फिर भी सीता हठ करती हैं। यहाँ एक बात और कह दें तो अनुचित नहीं होगा कि सीता इस हिरण को मार करके इसका मांस खाने के लिए इसको लाने को नहीं कहती हैं, जैसाकि कई लोग मानते हैं कि ये लोग मांस खाते थे परन्तु हिरण इतना सुन्दर था कि सीता इसे अपने पास रखने का लोभ संवरण नहीं कर पाती हैं। देखिए-

**समाप्तवनवासानां राज्यस्थानां च नः पुनः।**
**अन्तःपुरे विभूषार्थो मृग एष भविष्यति।।** - वा.रा. अरण्यकाण्ड ४३/१७

'जब हमारे वनवास की अवधि पूरी हो जायगी और हम पुनः अपना राज्य पा लेंगे, उस समय यह मृग हमारे अन्तःपुर की शोभा बढ़ायेगा।

जब हिरण को पकड़ने के लिए भगवान श्रीराम जंगल की ओर चले जाते हैं और जब वह हिरण हाथ नहीं आता तो उसे मार देते हैं और क्योंकि वह बहरूपिया मारीचि था इसलिए रावण की योजना को क्रियान्वित करते हुए वह श्रीराम की आवाज में हे लक्ष्मण! हे सीते! इस प्रकार से चिल्लाता है ताकि उधर कुटिया में माता सीता यह समझें कि राम के प्राण संकट में हैं, और ठीक यही हुआ। उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि तुम जाओ और अपने भाई की सुरक्षा करो और उनको लेकर के आओ। लक्ष्मण पहले से ही जानते थे कि यह मारीचि राक्षस है और भेष बनाकर के आया है। उन्होंने श्रीराम को यह कह भी दिया था। देखिए-

**शङ्कमानस्तु तं दृष्ट्वा लक्ष्मणो वाक्यमब्रवीत्।**
**तमेवैनमहं मन्ये मारीचं राक्षसं मृगम्।।** - वा.रा. अरण्यकाण्ड ४३/५

उसे देखकर लक्ष्मण के मन में सन्देह हुआ और वे बोले- 'भैया! मैं तो समझता हूँ कि इस मृग के रूप में वह मारीच नाम का राक्षस ही आया है।

अतः षड्यंत्र को भाँपते हुए उन्होंने माता सीता को कहा कि यह सब राक्षसों का षड्यंत्र है, ऐसा इस संसार में कौन है जो श्रीराम का कुछ बिगाड़ सके? पर माता सीता उस समय सोचने समझने की मनःस्थिति में नहीं थीं। उस समय उन्होंने लक्ष्मण को बहुत सारे कुवचन कहे। जिस प्रकार के बहुत से आरोप उन्होंने लगाए उन्हें

सुनकर अब लक्ष्मण के पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था।

यहाँ भी जैसे-जैसे आरोप सीता लक्ष्मण पर लगातीं हैं वे भी प्रक्षिप्त प्रतीत होते हैं। क्योंकि परिस्थितियाँ कितनी भी विषम हों ऐसी बातें और वह भी लक्ष्मण जैसे देवर से, सम्भव नहीं। आप भी देखें-

**तमुवाच ततस्तत्र क्षुभिता जनकात्मजा।**
**सौमित्रे मित्ररूपेण भ्रातुस्त्वमसि शत्रुवत्।।**
**यस्त्वमस्यामवस्थायां भ्रातरं नाभिपद्यसे।**
**इच्छसि त्वं विनश्यन्तं रामं लक्ष्मण मत्कृते।।** - वा.रा. अरण्यकाण्ड ३४/४-५

उनके इस व्यवहार से (अर्थात् राम की खोज में जाने को तत्पर न दिखने पर) वहाँ जनक किशोरी सीता क्षुब्ध हो उठीं और उनसे इस प्रकार बोलीं- 'सुमित्राकुमार! तुम मित्र रूप में अपने भाई के शत्रु ही जान पड़ते हो, इसीलिये तुम इस संकट की अवस्था में भी भाई के पास नहीं पहुँच रहे हो। लक्ष्मण! मैं जानती हूँ, तुम मुझ पर अधिकार करने के लिये इस समय श्रीराम का विनाश ही चाहते हो।

अब जो बताया और दिखाया जाता है वह यह है कि लक्ष्मण एक 'लक्ष्मण रेखा' खींच करके और सीता जी से आग्रह करके गए कि यह रेखा आपकी रक्षा करेगी, आप कृपया इस रेखा से बाहर न निकलें, जब तक कि मैं और भाई न आ जायं।

परन्तु बाल्मीकि रामायण में इस तरह की रेखा खींचने का संकेत भी नहीं है। देखिए-

**तया परुषमुक्तस्तु कुपितो राघवानुजः।**
**स विकाङ्गन् भृशं रामं प्रतस्थे नचिरादिव।।** - वा.रा. अरण्यकाण्ड ४६/१

सीता के कठोर वचन कहने पर कुपित हुए लक्ष्मण श्रीरामसे मिलने की विशेष इच्छा रखकर शीघ्र ही वहाँ से चल दिये।

यहाँ पर बस यह उल्लेख है कि जब सीता लक्ष्मण को काफी खरी खोटी सुना देती हैं तब लक्ष्मण वहाँ से निकल कर राम की खोज में चल देते हैं। बस।

आगे कहानी यह प्रचलित है कि रावण वेश बदलकर साधु के रूप में आता है। और जब भिक्षा लेने के लिए पर्णकुटी के अन्दर जाने लगता है तभी लक्ष्मण रेखा से आग की लपटें निकलती हैं और वह समझ जाता है कि वह अन्दर नहीं जा सकता। इसलिए सीता जी को बातों में लगा करके वह लक्ष्मण रेखा के बाहर बुला लेता है और जैसे ही सीता लक्ष्मण रेखा पार करके बाहर आती हैं रावण उनका अपहरण कर लेता है। यह सारा का सारा प्रकरण टेलीविजन और रामलीलाओं के माध्यम से बच्चा-बच्चा जानता है।

परन्तु यह समस्त प्रकरण कल्पना के आश्रित है। **कम से कम वाल्मीकि रामायण में ऐसी किसी 'रेखा' का उल्लेख नहीं है।** वाल्मीकि रामायण में लक्ष्मण के जाने की बात कहकर अगले ही श्लोक में लिखा मिलता है

**तदासाद्य दशग्रीवः क्षिप्रमन्तरमास्थितः।**
**अभिचक्राम वैदेहीं परिव्राजकरूपधृक्॥** - वा.रा. अरण्यकाण्ड ४६/२

लक्ष्मण के चले जाने पर रावण को मौका मिल गया, अतः वह संन्यासी का वेष धारण करके शीघ्र ही विदेह कुमारी सीता के समीप गया।

यहाँ किसी लक्ष्मण रेखा का वर्णन नहीं है। आगे आप यह भी देखेंगे की माता सीता ने इस कपट वेषधारी रावण को साधु जान करके कुटिया के अन्दर बुलाकर उसे बिठाकर के उसके समक्ष भोज्य पदार्थ रखे। देखिए-

**इयं बृसी ब्राह्मण काममास्यता-मिदं च पाद्यंप्रतिगृह्यतामिति।**
**इदं च सिद्धं वनजातमुत्तमं त्वदर्थमव्यग्रमिहोपभुज्यताम्॥** - वा.रा. अरण्यकाण्ड ४६/३६

वे बोलीं- 'ब्राह्मण! यह चटाई है, इस पर इच्छानुसार बैठ जाइये। यह पैर धोने के लिये जल है, इसे ग्रहण कीजिये और यह वन में ही उत्पन्न हुआ उत्तम फल-मूल आपके लिये ही तैयार करके रखा गया है, यहाँ शान्तभाव से उसका उपभोग कीजिये।

उक्त सारे वर्णन और प्रमाणों को देखकर के यह निश्चित होता है कि लक्ष्मण रेखा खींचने की बात पूरी कल्पना है, क्योंकि वाल्मीकि रामायण में यह नहीं है। वाल्मीकि रामायण ही भगवान श्रीराम के जीवन का शुद्ध चरित्र है। हाँ! लम्बे कालक्रम में उसमें भी बहुत सारे प्रक्षेप लोगों ने कर दिए हैं पर कोई भी विवेकशील व्यक्ति उनका पता लगा करके सच्चाई समझ सकता है। इन प्रक्षिप्त श्लोक/प्रकरणों को निकाल देना ही हमारे लिए श्रेयस्कर है।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

❑❑❑


# सत्यार्थ मित्र बनें

**न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।**
**आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।**

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन-चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन-चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण: **AC. No.: 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001** में जमा करा कृपया सूचित करें।

# स्वभाव बदलते ही स्वर्ग हथेली में

अपनी प्यारी घटनाओं में से एक घटना है। एक सन्त नदी में स्नान कर रहे थे। सन्त भगवान सूर्य को अपनी ओर से अर्घ्य समर्पित करने लगे, तभी उनकी नजर नदिया में डूबते हुए किसी बिच्छू पर जा टिकी। सन्त को बिच्छू पर दया आ गई। सन्त ने अपना हाथ बिच्छू की तरफ बढ़ाया और उसे अपने हाथों में लेकर बाहर किनारे पर छोड़ना चाहा। सन्त ने जैसे ही उसे हथेली में उठाया, उसने डंक मार दिया। सन्त कराह उठे। बिच्छू हाथ से छिटककर पानी में जा गिरा। वह फिर डूबने लगा। सन्त को दया आ गई। उन्होंने फिर उसे हाथ में उठाया और किनारे पर पहुँचाना चाहा, तभी उसने फिर डंक मारा। बिच्छू पानी में जा गिरा। बिच्छू ने एक-दो-बार नहीं, कई-कई बार डंक मारा, लेकिन सन्त ने अपना प्रयास नहीं छोड़ा।

नदी के किनारे खड़ा एक राहगीर यह सब-कुछ देख रहा था। उसने सन्त से कहा-महानुभाव, यह बिच्छू आपको कई बार डंक मार चुका है। फिर भी आप इसे बचाने में लगे हैं। आप इसे छोड़ क्यों नहीं देते ? सन्त ने कहा- जो बात तुम मुझसे कह रहे हो, वही बात मेरे मन में भी आई, मगर तभी मन में विचार आया कि जब यह बिच्छू अपने स्वभाव को छोड़ने को तैयार नहीं है, तो मैं अपने स्वभाव से क्यों डिगूँ? बिच्छू का स्वभाव डंक मारना है, तो साधु का स्वभाव क्षमा और दया दिखाना है।

मनुष्य का अपना स्वभाव होता है और जानवर का अपना स्वभाव। **दुनिया का सबसे कठिन काम मनुष्य का अपने स्वभाव को बदल लेना है।** जीवन में संन्यास स्वीकार करना आसान है, लेकिन अपने स्वभाव में परिवर्तन ले आना संन्यास को स्वीकार करने से कठिन है। संन्यास की प्रक्रिया में मात्र ३० मिनट लगते हैं, पर स्वभाव को बदलने में ३० साल लग जाते हैं। कितना आसान होता है सन्त बन जाना, पर कितना कठिन होता है शान्त होना। वेशभूषा बदल लेना, नाम का परिवर्तन कर लेना आसान है, लेकिन मनुष्य के चित्त और उसके स्वभाव में जमी हुई विकृतियों और स्थितियों को बदल लेना मनुष्य के लिए बेहद दुष्कर है।

मनुष्य जब अपने स्वभाव से, मनुष्यत्व से नीचे गिरता है, तो वह पशु हो जाता है, मनुष्य जब मनुष्यत्व से ऊपर उठ जाता है, तो देवता हो जाता है। दुनिया में दिखाई देने वाले पशु हमारे अपने ही प्रतिबिम्ब हैं और दुनिया में नजर आने वाले देव-प्रतिरूप भी हमारी ही छवियाँ हैं। DOG को अगर उलट डालो, तो GOD हो जाता है और GOD को उलट डालो तो DOG हो जाता है। डॉग का अपने स्वभाव से ऊपर उठ जाना गॉड हुआ और गॉड का अपने स्वभाव से फिसल जाना डॉग हुआ। मनुष्य को मैंने पशु होते पाया है और उसमें देवत्व के चिह्न भी देखे हैं। हम अपनी अन्तरात्मा में यह

पहचानने का प्रयास करें कि क्या हमारे भीतर पशुता है? पशुता न होना सौभाग्य की बात है। पशुता के लक्षण हों तो बात सचमुच विचारणीय है।

## स्वभाव सुधरे तो भव सुधरे

सन बदल सकते, अपने गिरते हुए में ऊँचा क्यों नहीं उठा सकते?

संसार को छोड़ आना निश्चित तौर पर मनुष्य के लिए कठिन काम है। मैंने संन्यासियों को भी क्रोध-कषाय करते हुए पाया है। मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो बाहर से तो ब्रह्मचर्य अंगीकार कर लेते हैं, लेकिन अपने अन्तर्मन में वे ब्रह्मचर्य को साध नहीं पाते। बाहर से किसी को अंगीकार कर लेना बड़ा आसान काम है, लेकिन अन्तर्मन में उसे साध लेना बड़ा मुश्किल है। मनुष्य का गिरता हुआ स्वभाव उसके लिए नरक का निमित्त बनता है और उसका उठता हुआ स्वभाव उसके लिए स्वर्ग का आधार बनता है। गिरता हुआ स्वभाव शत्रु है, उठता हुआ स्वभाव मित्र है। इस नाते मनुष्य खुद ही अपना मित्र और शत्रु है। मैंने पाया है कि वेशभूषा बदल लेना बहुत आसान है, लेकिन अपने चित्त को निर्मल करना, व्यवहार को शुद्ध और सौम्य करना कठिन है। कौन नहीं जानता कि क्रोध करना बुरा है, अहंकार करना गलत काम है; चोरी करना कुरूप कृत्य है; संग्रह और परिग्रह करना सामाजिक अन्याय है। मनुष्य तभी तक यह बात कहता है कि क्रोध करना बुरा है, जब तक कि वह स्वयं क्रोधित न हो

जाए। क्रोधित हो जाने पर वह सब कुछ भूल जाता है। आदमी भले ही कहता हो कि अहंकार करना गलत है, लेकिन दो-चार आदमी उसकी तारीफ कर दें तो कब वह स्वयं अहंकारग्रस्त हो जाता है, पता ही नहीं चलता। आदमी के पास ज्ञान प्रचुर है, शिक्षाएँ विपुल हैं, मगर अपने स्वभाव की समझ नहीं है। जीवन में साधुता को लाने के लिए ही सम्बोधन दिया जा रहा है कि मनुष्य अपने स्वभाव को सरस-सरल सौम्य बनाएँ।

हर गृहस्थ सन्त नहीं हो सकता, मगर हर गृहस्थ अपने हृदय को तो साधु बना ही सकता है। अगर आप जानते हैं कि आपका स्वभाव विकृत है, स्वभाव में क्रोध और कषाय हैं, तो आप अपने स्वभाव को बदलने में कामयाब हो सकते हैं। मैंने गन्दगी में से सुगन्ध को पैदा होते पाया है; मिट्टी में से फूलों को खिलते हुए देखा है। फिर हम अपना स्वभाव क्यों नहीं बदल सकते? अपने गिरते हुए मन को ऊँचा क्यों नहीं उठा सकते?

मुझे स्मरण है, एक सन्त विहार कर रहे थे। सन्त के सहयात्रियों में कुछ उद्दंड युवक भी शामिल थे। वे सन्त के साथ मसखरी करने लगे। उनमें कोई नदिया से पानी लेकर उलीचने लगा तो कोई सन्त के कागज की सलाई डालने लगा। सन्त शान्त बैठे रहे।

सन्त का मौन युवकों को रास नहीं आ रहा था। साथ उनकी बेजा हरकतों में और इजाफा हो गया। सन्त की सेवा में एक यक्ष रहा करता था। उससे सन्त के साथ ज्यादती देखी नहीं जा रही थी। उसने प्रकट होकर सन्त से कहा "पूज्यवर आप अगर आदेश दें तो मैं इन उद्दंड युवकों को समुचित दण्ड दूँ और इन्हें नदिया में डुबो दूँ। सन्त ने कहा- नहीं यक्ष, इससे इन युवकों को कोई लाभ नहीं होगा। तुम अगर कुछ करना ही चाहते हो इनका स्वभाव बदल डालो, ताकि ये किसी और सन्त के साथ दुर्व्यवहार न करें।

अगर स्वभाव बदल जाए तो व्यक्ति स्वतः ही साधु पुरुष हो जाता है। अगर आप चाहते हैं कि आपका स्वभाव बदले, तो अव्वल आप यह तफ्तीश करें कि

आपके स्वभाव में क्या कमियाँ हैं, क्या बुराइयाँ हैं; कौन-सी बुरी आदत आपका स्वभाव बन चुकी है? जब तक आप यह नहीं तलाशेंगे कि आपके स्वभाव में अमुक कमियाँ हैं, तो आप स्वभाव को बदलने के लिए किंचित् भी संकल्पबद्ध नहीं हो पाएँगे।

**बोधपूर्वक करें क्रोध का निरोध**

हमें यह स्वीकार करना होगा कि मुझे क्रोध आता है; मेरे चित्त में मूर्च्छा, घृणा और ईर्ष्या है। मेरे स्वभाव में कमी है। मेरे मन में विकार और प्रतिकार हैं। क्रोध आदमी का स्वभाव बन जाता है तो गालियाँ

तकियाकलाम बन जाती हैं। आदमी गालियों से अपनी जुबान को बार-बार गन्दा करते हैं। यह अशोभनीय है कि आप गले में जनऊ धारण कर, मस्तक पर चन्दन का तिलक कर, मुँह से अपशब्दों का उच्चारण करें? फिर आपकी कुलीनता, गरिमा और मर्यादा का क्या हुआ? आदमी की भाषा ऐसी हो कि वह उसके कुल की पहचान कराए।

जब आप यह स्वीकार करेंगे कि आपको क्रोध आता है, तो उसका उपचार भी ढूँढा जा सकेगा। केवल सत्संगों में बैठ लेने से या शास्त्रों को पढ़ लेने से किसी का स्वभाव बदला नहीं है और न ही प्रतिक्रमण या प्रार्थनाओं से आदमी परमात्मा का पुजारी हो जाता है। ये सब चीजें सतही हैं। मैं जिस स्वभाव की बात कर रहा हूँ वह मनुष्य का अवचेतन मन है। जहाँ मनुष्य की मूल विकृतियाँ, मूल कषाय और मूल वृत्तियाँ जमी हुई रहती हैं। मैं आपको उन्हीं मूल वृत्तियों की ओर ले जाना चाहूँगा। अपनी कमियों को पहचानने के बाद दूसरे चरण में अपने आपको उन निमित्तों से निरपेक्ष करना होगा जिन निमित्तों को पाकर अपना स्वभाव विकृत और क्रोधित होता है।

निमित्तों से तुम अपने आप को प्रभावित मत करो। ऐसा नहीं है कि लोग तुम्हें गालियाँ न देंगे लेकिन तुम किसी भी गाली को स्वीकार मत करो। लोगों के पास जो होता है लोग तुम्हें वही देते हैं। अगर किसी ने आपको गाली दी और आपने भी उसको गाली दे दी यानी निमित्त आया और निमित्त ने आपको प्रभावित किया। ऐसा नहीं है कि किसी ने गाली दी इसलिए आपने गाली दी पर आपके भीतर गाली थी इसलिए वह निमित्त को पाकर प्रकट हो गई। जैसे अंगारों पर छाई राख के कारण अंगारे हमें दिखाई नहीं देते न हीं उसकी आँच महसूस होती है पर जैसे ही निमित्त की कोई हवा से राख हटी और दबे अंगारे प्रकट हो गए। दूसरे के क्रोध से आप भी क्रोधित हो रहे हैं तो उसका अर्थ यह हुआ कि आप अपने जीवन में सागर और सरोवर न हो पाए। अगर सरोवर में कोई अंगारा फेंकेगा तो अंगारा ही बुझेगा सरोवर में कोई फर्क नहीं पड़ेगा। अगर आप सागर हो जाएँ तो मजाल है कि कोई निमित्त आपको प्रभावित और आन्दोलित कर जाए। अगर कोई रूप, शब्द, आकार हमें आन्दोलित करता है तो इसलिए कि हम शीतल न हो पाए, हम अनासक्त न हो पाए।

**क्रमशः .....**

❑❑❑


**आजीवन सत्यार्थ मित्र**

**सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।**

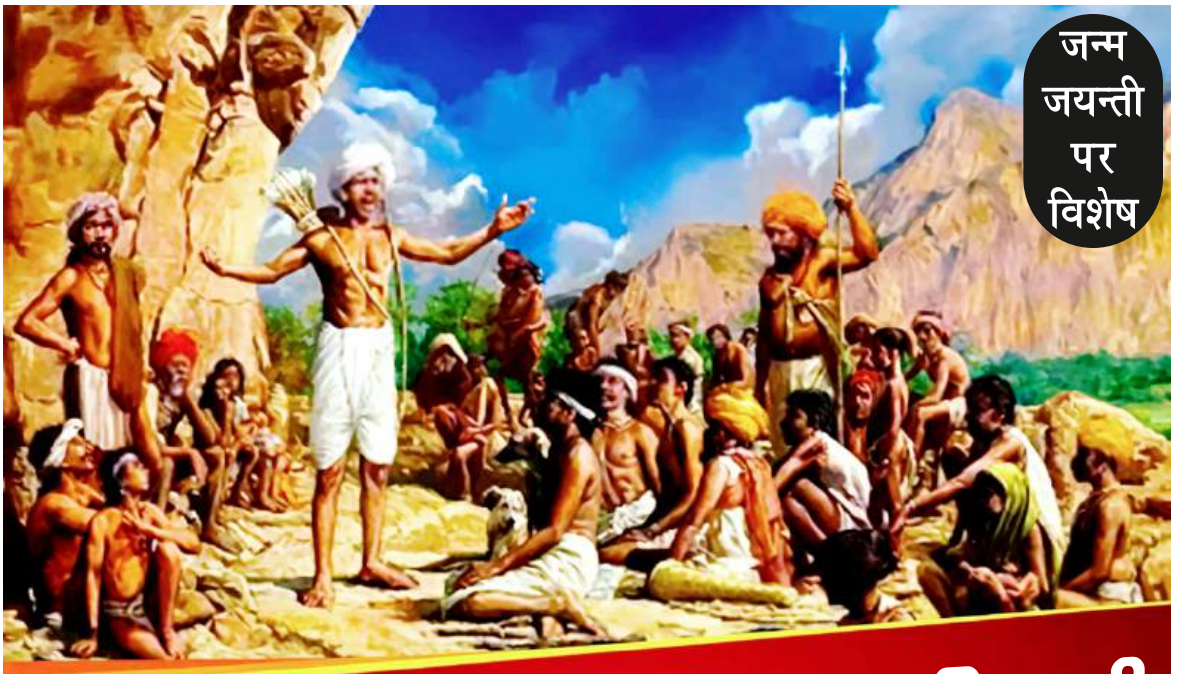

जन्म जयन्ती पर विशेष

# भगवान बिरसा मुण्डा एक महान् क्रान्तिकारी

भारत के इतिहास में कई ऐसे व्यक्तित्व हुए हैं जिन्होंने अपने जीवन से यह साबित किया कि सच्चा परिवर्तन किसी बड़े पद या धन से नहीं बल्कि साहस और विश्वास से आता है। **इन्हीं महान् व्यक्तियों में एक नाम है बिरसा मुण्डा।** जिन्होंने आदिवासी समाज को एक नई पहचान दी और अपने लोगों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। बिरसा मुण्डा का जन्म १५ नवम्बर १८७५ को झारखण्ड के उलीहातु गाँव में हुआ था। उनका परिवार साधारण था खेती-बाड़ी और मेहनत से जीवन चलता था। लेकिन इसी सादगी में उन्होंने जीवन का असली मूल्य समझा। वे बचपन से ही तेज बुद्धि और जिज्ञासु स्वभाव के थे। जब उन्होंने देखा कि अंग्रेज अधिकारी और जमींदार आदिवासी लोगों की जमीन हड़प रहे हैं, उनके साथ अन्याय और शोषण किया जा रहा है, तो उनके भीतर एक आग जल उठी। उन्हें महसूस हुआ कि अगर आज आवाज नहीं उठाई तो आने वाली पीढ़ियाँ अपनी पहचान भी खो देंगी। तभी उन्होंने ठान लिया कि वे अपने समाज को जागरूक करेंगे और अन्याय के खिलाफ लड़ेंगे। धीरे-धीरे बिरसा मुण्डा लोगों के बीच नेता की तरह उभरने लगे। उन्होंने सबको समझाया कि अपनी जमीन और संस्कृति की रक्षा खुद करनी होगी। और जब तक हम एक नहीं होंगे तब तक कोई हमारी बात नहीं सुनेगा। उन्होंने लोगों से कहा कि नशा और अंधविश्वास छोड़कर मेहनत और शिक्षा का रास्ता अपनाओ तभी असली आजादी का रास्ता खुलेगा। उनके इन विचारों ने पूरे आदिवासी समाज में नई सोच भर दी और लोग उनके चारों ओर एकजुट होने लगे। साल १८९५ के आसपास बिरसा मुण्डा ने अंग्रेज़ों और जमींदारों के अत्याचारों के खिलाफ एक बड़ा आन्दोलन शुरू किया। जिसे उलगुलान यानी महान् विद्रोह कहा गया। यह विद्रोह सिर्फ सत्ता के खिलाफ नहीं था बल्कि आत्मसम्मान की पुकार थी और अपनी धरती को बचाने की ललकार थी। जब उनके साथियों ने देखा कि बिरसा जेल जाने से नहीं डरते तो उनमें भी नया जोश आ गया। लोग बिरसा को धरती आबा यानी धरती पिता कहने लगे। क्योंकि वे

उनके लिए एक रक्षक और मार्गदर्शक बन गए थे। अंग्रेज सरकार ने उन्हें खतरनाक मानते हुए तीन फरवरी १९०० को गिरफ्तार कर लिया। लेकिन कैद में रहने के बावजूद उनके विचार लोगों के दिलों में गूँजते रहे। कुछ महीनों बाद ९ जून १९०० को राँची जेल में उनकी मृत्यु हो गई। उस समय वे केवल २५ वर्ष के थे लेकिन इतने छोटे जीवन में उन्होंने जो असर छोड़ा वह आने वाले समय में भी मिटाया नहीं जा सका। उनके बलिदान ने यह दिखा दिया कि असली वीर वही होता है जो अपने लिए नहीं बल्कि अपने लोगों के लिए जीता है। आज बिरसा मुण्डा को आदिवासी गौरव और स्वतंत्रता संग्राम के प्रेरणास्रोत के रूप में याद किया जाता है। उनके नाम पर अनेक विश्वविद्यालय संस्थान और स्मारक बनाए गए हैं। **भारत सरकार ने उनके सम्मान में १५ नवम्बर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में घोषित किया है।** उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्ची वीरता दूसरों पर शासन करने में नहीं बल्कि उनके अधिकारों की रक्षा करने में होती है। उन्होंने अपने कर्मों से दिखाया कि एक आम व्यक्ति भी समाज में बड़ा परिवर्तन ला सकता है और यही कारण है कि आज भी जब भी कोई अन्याय के खिलाफ आवाज उठाता है तो इतिहास में बिरसा मुण्डा का नाम सबसे पहले याद किया जाता है। क्योंकि उन्होंने हमें यह भरोसा दिया कि जब दिल में सच्चाई और आत्मबल हो तो कोई भी ताकत इंसान की आवाज नहीं दबा सकती।

संक्षेप में कहें तो बिरसा मुण्डा भारतीय जनजागरण के ऐसे तेजस्वी दीपक थे जिन्होंने आदिवासी चेतना को स्वतंत्रता का स्वर दिया। उनका व्यक्तित्व सरल किन्तु अग्नि-समान था। एक सन्त, एक योद्धा और एक समाज सुधारक का अद्भुत संगम। उन्होंने जंगलों के वासियों में स्वाभिमान और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष की ज्वाला प्रज्ज्वलित की। 'उलगुलान' उनके नेतृत्व में केवल विद्रोह नहीं, बल्कि आत्मगौरव का घोष था। बिरसा मुण्डा ने अपने अल्प जीवन में वह अमर सन्देश दे दिया कि भारत की स्वतंत्रता केवल नगरों की नहीं, वनों की भी पुकार है।

❑❑❑

- सिद्धम आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

## दान की अपील

**सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।**

G Pay

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

G Pay PhonePe Paytm

BHIM UPI

## सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

**सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों में से अनेकों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रूपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफिस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।**

धर्माचार्य बड़ी-बड़ी कथाएँ कर रहे हैं। वेद-प्रचार हो रहा है। बड़े-बड़े सम्मेलन हो रहे हैं, पर किसी को ध्यान नहीं। वैदिक धर्म तो सुखपूर्वक जीने का एक सूत्र देता है। सनातन धर्म वही है जो ''ओम् द्यौ शान्ति, अन्तरिक्ष शान्ति, पृथ्वी शान्ति, आपः शान्ति'' की बात वा प्रार्थना करता है। प्रार्थना बहुत हो रही है, पर प्रार्थना के साथ पुरुषार्थ कुछ नहीं हो रहा। जीवन में बदलाव कुछ नहीं हो रहा। जल शान्ति देने वाला हो, अन्तरिक्ष शान्ति देने वाला हो, वनस्पति शान्ति देने वाली हो, हवा शान्ति देने वाली हो, परन्तु हम इसके लिए क्या कर रहे हैं? **हम जल को बिगाड़ रहे हैं, हवा को बिगाड़ रहे हैं, बादलों को बिगाड़ रहे हैं, वनस्पतियों और मिट्टी में जहर घोल रहे हैं। फिर शान्ति पाठ बोल रहे हैं।** न तो वैदिक विद्वानों को इसकी चिन्ता है, न पौराणिक कथा वाचकों को, न धार्मिक नेताओं को, सभी मदहोश होकर जी रहे हैं।

मुझे याद आता है Sacrifice नाटक, जिसे रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा था। मैंने ११वीं-१२वीं कक्षा में अंग्रेजी में पढ़ा था। उसमें राजा का नाम रघुपति था और सेनापति का नाम नयन राय। नयन राय गलती करता है, पशु की बलि चढ़ाता है और शराब पीकर मन्दिर में बैठा है। राजा उसे बन्दी बनाने सेना सहित आता है। नयन राय शराब के नशे में सोचता है कि राजा नहीं आएगा और अन्त में राजा आकर उसे बन्दी बनाता है। आज मनुष्य भी उसी तरह शराब के नशे में डूबा है। शराब नहीं, बल्कि टेक्नोलॉजी की शराब है, विकास की शराब है, जीडीपी की शराब है, सुख-सुविधाओं की शराब है, इन्द्रियों की भूख की शराब है। इस शराब में मनुष्य ऐसा डूबा है कि उसे अपना विनाश दिखाई नहीं देता। जब स्वयं मरेंगे, हमारा मकान गिरेगा, भूकम्प आएगा, हमारे घर बहेंगे, हमारे पशु बहेंगे, जब यहाँ बादल फटेंगे, तब हमें लगेगा कि यह क्या हुआ? तब आप करेंगे भी क्या?

अब पर्यावरण इतना क्रुद्ध और दूषित हो चुका है कि यदि आप हाथ से बुने हुए मोटे खादी के कपड़े पहनें, बैलों से खेती करें, चूल्हे पर रोटी बनाएँ, कोई सुविधा का प्रयोग न करें, बैलगाड़ी या घोड़े पर सवारी करें, सभी प्रकार के रेडिएशन्स के प्रयोग को तत्काल पूर्णरूपेण बन्द कर दें, तब भी इस पर्यावरण को शुद्ध होने में वर्षों लगेंगे। लेकिन बन्द करना तो दूर, हम निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं।

आज उपग्रह छोड़े जा रहे हैं, ताकि हर जगह मोबाइल नेटवर्क और इन्टरनेट पहुँचे, वे क्या वायुमण्डल और बादलों को प्रभावित नहीं करेंगे? करेंगे, पर हमें तो नेट चाहिए। पहाड़ों पर रहने वालों को भी जीने नहीं देंगे। वनों में रहने वालों को भी जीने नहीं देंगे। इससे मनुष्य का व्यवहार बदलेगा, पशुओं का व्यवहार बदलेगा। बदल भी रहा है। कुत्ते काट रहे हैं। गाय सड़क पर चलते-चलते सींग मारकर गिरा देती है। सांड गिरा देते हैं। यह सब हमारी टेक्नोलॉजी से उत्पन्न होने वाली तरंगों का दुष्प्रभाव है, जो हमारी प्रवृत्ति और पशुओं की प्रवृत्ति दोनों को बदल रहा है। जरा सोचिए, जब हर मनुष्य का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाएगा, तब क्या होगा? आप देखिए, जो ज्यादा मोबाइल प्रयोग करता है, वह चिड़चिड़ा स्वभाव का होता है। उसका डीएनए बदलता है। तरंगों का प्रभाव अवश्य पड़ता है। ये तरंगें इतनी

सूक्ष्म हैं कि हमारे भीतर प्रवेश कर हमारी रसायनिकी को धीरे-धीरे बदल देती हैं। तो क्या वे पशुओं को नहीं बदलेंगी? उनकी बायोकेमिस्ट्री बदलेगी, उनका स्वभाव बदलेगा। जो कार्य बिना नेट के हो सकते हैं, उन्हें भी नेट से ही करना, डिजिटल इण्डिया की सनक एवं डिजिटल

विश्व की सनक, इस ग्रह को निर्जीव बनाकर ही छोड़ेगी। अब जरा सोचिए- जितने पशु हमने सड़क पर छोड़ रखे हैं, यदि वे सब हिंसक हो जाएँ, सभी कुत्ते हिंसक हो जाएँ, तो क्या होगा? आज कुत्तों के लिए सर्वोच्च न्यायालय आदेश दे रहा है, कल गायों के लिए भी आदेश आएगा। जब आपके घर के पशु हिंसक होकर आप पर ही आक्रमण करेंगे, तब आप क्या करेंगे? इसीलिए यह प्रत्येक भारतवासी नहीं, बल्कि प्रत्येक विश्ववासी का कर्तव्य है कि वह अपनी जीवन-शैली और तथाकथित विकास पर गहराई से विचार करे कि वह कहाँ जा रहा है। चार दिन की चाँदनी, फिर अंधेरी रात आने वाली है। अभी एक और सूचना आ रही है। वैज्ञानिक कह रहे हैं कि कहीं दूर से एलियंस का एक बहुत बड़ा विमान आ रहा है, जिसका व्यास १४ कि.मी. है। वह नवम्बर में आएगा, यहाँ सूर्य के निकट आएगा। **अक्टूबर-नवम्बर में वह धरती पर तबाही ला सकता है।** इसके मुझे दो पक्ष दिखाई देते हैं। एक तो यह कि कोई इस धरती के वायुमण्डल को पूरी तरह डिस्टर्ब करेगा या कोई संक्रामक रोग, वायरस फैला देगा। फिर कहेगा- एलियंस ने कर दिया। ऐसा भी कोई शैतान वा शैतानों का गिरोह हो सकता है, जो धरती पर बैठा हुआ है और यदि वास्तव में एलियंस हैं, तो इस धरती का जितना जल्दी विनाश हो, उतना ही ठीक है। एक साथ हो जाए तो अच्छा है, क्योंकि धीरे-धीरे विनाश बहुत कष्टदायक होता है। तड़प-तड़प कर मरना बहुत दुःखद और पीड़ादायक होता है। हमारे ये जो आदर्श अर्थात् पूंजीपति वा टेक्नोक्रेट्स हैं, वे तो हमें तड़पा-तड़पा कर मारेंगे। और यदि कोई बाहर से एलियन आता है और एक साथ समाप्त करता है, तो करे, अच्छी बात है। लेकिन मुझे तो आशंका यह है कि उसके बहाने धरती पर बैठे शैतान इस धरती को बहुत हानि पहुँचाएँगे और जनसंख्या को कम करने का जो प्लान बन रहा है, उस प्लान के अन्तर्गत यह भी एक योजना हो सकती है। अधिक क्या कहें? सारे विश्व में विष घोला जा चुका है। सबकी बुद्धि को विकृत कर दिया गया है। कोई सोचने-समझने के लिए तैयार नहीं है। जिनके अन्दर दर्द है, वे व्यक्त कर देते हैं। वस्तुतः इस सम्पूर्ण दुरवस्था, जिसे हम विकास कह रहे हैं, ने हमारे विवेक शक्ति को नष्ट कर दिया है। हम आंकड़ों में जीते हैं, किसी समस्या के गहन विश्लेषण की क्षमता खो चुके हैं वा खोते जा रहे हैं। धरती के शैतान यही तो चाहते हैं कि सभी मनुष्य बुद्धि से विकलांग हो जाएँ, जिससे उन्हें सहजता से दास बनाया वा मारा जा सके।

इसलिए मेरा सभी पृथिवीवासियों से करबद्ध निवेदन है कि वे अपनी जीवन शैली को बदलें। अपनी-अपनी सरकारों को जगाएँ। अपने-अपने नेताओं को जगाएँ। उनसे पूछें कि ये जो आपदाएँ आ रही हैं, इस पर सरकार चुप क्यों है? सरकार का क्या कहना है? क्या इस पर विचार नहीं करना चाहिए कि यह सब क्यों हो रहा है? यदि यही होता रहा तो भारत के १४० करोड़ लोगों का और धरती के आठ अरब लोगों का क्या होगा? ईश्वर हम सबको सद्बुद्धि दे। विशेषकर उन लोगों को जो धरती को तबाह करने में लगे हैं, हमारी सरकारों, वैज्ञानिकों, टेक्नोक्रेटों, पूँजीपतियों को। ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि दे, ताकि वे यह न समझें कि वे अमर हैं या ईश्वर हैं या धरती के सम्राट् हैं, क्योंकि जब उन्हें सद्बुद्धि आएगी, तभी जनता भी बच जाएगी। अन्यथा न जनता बचेगी और न वे स्वयं बचेंगे, सारी धरती श्मशान बन जाएगी। इसलिए यदि जाग सको, अपने को बदल सको, तो तुरन्त जागो और अपना धर्म व कर्तव्य निश्चित करो, अन्यथा रोते-रोते आँखों में आँसू भी नहीं बचेंगे और न रोने का समय ही बच पाएगा।

- प्रमुख- वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान
( श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास द्वारा संचालित )
गाँव- भागलभीम, भीनमाल ( राज. )

❑❑❑

# सद्धर्म वेद के प्रचार में मत-मतान्तरों की अविद्यायुक्त बातें बाधक

संसार में अनेक मत-मतान्तर हैं। विचार करने पर यह विदित होता है कि ऐसा मनुष्यों व आचार्यों की अल्पज्ञता व अविद्या के कारण हुआ करता है। संसार में तीन अनादि व नित्य पदार्थों वा सत्ताओं का अस्तित्व है। ये सत्तायें हैं ईश्वर, जीव व प्रकृति। ईश्वर व जीव चेतन सत्तायें हैं तथा प्रकृति जड़ सत्ता है। ईश्वर अनादि, नित्य, सर्वव्यापक एवं सर्वज्ञ है तथा जीव भी अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, एकदेशी, ससीम तथा अल्पज्ञ हैं। संसार में ईश्वर अजन्मा है जिसका न कभी जन्म वा अवतार होता है और न ही कभी उसकी मृत्यु होती है। सर्वव्यापक एवं निराकार सत्ता का जन्म हो भी नहीं सकता। प्रत्येक कार्य का एक प्रयोजन, उद्देश्य व कारण हुआ करता है। जीव के जन्म लेने के कारणों पर वेद एवं वैदिक साहित्य से प्रकाश पड़ता है। **ईश्वर के जन्म लेने का कोई कारण नहीं है। जो कारण बताये जाते हैं वह मनुष्य की अल्प बुद्धि, ज्ञान व सोच के कारण कहे जाते हैं।** विचार करने पर वह सब असत्य व अनावश्यक सिद्ध होते हैं। सर्वव्यापक ईश्वर सृष्टि की रचना, पालन, प्रलय सहित वेदों का ज्ञान प्रदान करने, सभी जीवों के पाप-पुण्यों के फलों तथा जन्म व मरण की व्यवस्था बिना जन्म लिये ही कर सकते हैं। जिस ईश्वर ने सूर्य, चन्द्र व पृथिवी सहित ब्रह्माण्ड के अनन्त लोक लोकान्तरों को धारण कर रखा है वह तुच्छ रावण, कंस व दुर्योधन आदि अत्याचारियों को भी मार सकता है। उनको मारने व धर्म की स्थापना के लिये ईश्वर को जन्म लेने की आवश्यकता नहीं होती है।

ईश्वर जीवात्मा को जन्म देता है, स्वयं जन्म लेता नहीं है। धर्म की स्थापना वेदों के ज्ञान को जानने व प्रचार करने से होती है। आज भी वेद ज्ञान उपलब्ध है जिसका अध्ययन व प्रचार कर धर्म की रक्षा हो सकती है। ईश्वर एक स्वयंभू तथा जन्म व मरण के बन्धनों सर्वथा मुक्त एक सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान सत्ता है। ईश्वर से इतर जीव की सत्ता है जो चेतन एवं ज्ञान व कर्म करने की क्षमता से युक्त है। एकदेशी एवं ससीम होने से यह जीवात्मायें अल्पज्ञ हैं। जीव में कुछ स्वाभाविक ज्ञान होता है तथा इससे अधिक ज्ञान को वह अपने प्रयत्न व पुरुषार्थ आदि से मनुष्य जीवन में प्राप्त कर सकते हैं। मनुष्य जितना वेदों के निकट होगा व उनके सत्य अर्थों को जानेगा उतना ही विद्वान् होता है। वेद ज्ञान से हीन मनुष्य उच्च कोटि का ज्ञानी नहीं हो सकता। ईश्वर व जीवात्मा विषयक ज्ञान, कर्मफल सिद्धान्त तथा मनुष्य के जन्म व मृत्यु

से जुड़े अनेक प्रश्नों का उत्तर केवल वेद व वैदिक सहित्य में ही उपलब्ध होता है। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ से प्रायः सभी व अधिकांश वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों का ज्ञान होता है। जो मत व सम्प्रदाय वेदों के निकट हैं उनमें उतनी अधिक सत्य ज्ञान से युक्त मान्यतायें व परम्परायें हैं और जो वेदों से दूर रहे हैं उनमें ज्ञान व विज्ञान विरुद्ध बातें अधिक होना विदित होता है। इस तथ्य की पुष्टि मत-मतान्तरों के ग्रन्थों का अध्ययन कर की जा सकती है।

संसार में अनेक मत मतान्तर प्रचलित हैं। किसी का

कम तो किसी का अधिक प्रभाव है। जिसका प्रभाव अधिक है उसके अनुयायी कट्टरता से अपने मत का प्रचार करते हुए दीखते हैं। कट्टरता के साथ कुछ संगठनात्मक बातें व नीति विषयक निर्णय भी होते हैं। यदि सभी मत-मतान्तरों में ज्ञान तत्व पर विचार करें तो वह उनके प्रभाव की मात्रा में दृष्टिगोचर नहीं होता। इसे जानने में ऋषि दयानन्द कृत 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रन्थ सर्वाधिक सहायक सिद्ध होता है। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के प्रथम दस समुल्लासों में इसके लेखक ऋषि दयानन्द ने वेद व वैदिक धर्म का परिचय कराया है और उसकी सत्यता व प्रामाणिकता के अनेक प्रमाण दिये हैं। धर्म व मानव जीवन विषयक सभी महत्वपूर्ण आवश्यक वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों पर भी प्रकाश डाला गया है। सत्यार्थप्रकाश के प्रथम दस समुल्लासों को पढ़कर मनुष्य सत्यधर्म, जो ज्ञान व विज्ञान पर आधारित है, से परिचित हो जाता है। निष्पक्ष अर्थात् पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ को पढ़ने से आत्मा वैदिक मान्यताओं की सत्यता को स्वीकार करती है। इससे मनुष्य निर्भ्रान्त व निःशंक हो जाता है। यही वेद मत सृष्टि के आदि काल से १ अरब ९६ करोड़ वर्षों से अधिक काल अवधि तक भारत सहित विश्वभर में प्रचलित रहा है। पाँच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के बाद वेद के विद्वानों के आलस्य, प्रमाद व अव्यवस्थाओं के कारण वेद-प्रचार न होने से देश देशान्तर में अविद्यायुक्त मत प्रचलित हुए। ऋषि दयानन्द ने पूर्ण निष्पक्षता से सभी मत-मतान्तरों की मान्यताओं व सिद्धान्तों पर दृष्टि डाली, गहन अध्ययन किया व उनकी समीक्षायें कीं। इस समीक्षा को उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के चार समुल्लासों में प्रस्तुत किया है। ऋषि दयानन्द की समीक्षा से यह सिद्ध होता है कि सभी मत-मतान्तर अविद्या व असत्य मान्यताओं से युक्त हैं। उन्होंने इसके प्रमाण भी सत्यार्थप्रकाश में प्रस्तुत किये हैं। उन्होंने कहा है कि मत-मतान्तर के लोग अपने हित व अहित के आधार पर सत्य का ग्रहण व असत्य का परित्याग कर सकते हैं। उनका बनाया हुआ यह नियम प्रसिद्ध है कि 'सत्य का ग्रहण तथा असत्य का त्याग करना चाहिये।' 'अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।'

सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से यह तथ्य विदित होता है कि हमारे मत-मतान्तरों में जो अविद्यायुक्त कथन व मान्यतायें हैं वह जीव की अल्पज्ञता अर्थात् अविद्या आदि के कारण से हैं। परमात्मा सर्वज्ञ होने से अविद्या से मुक्त है। ऐसा ही अविद्या से मुक्त ईश्वर का ज्ञान चार वेद हैं। ऋषि दयानन्द की कृपा से आज हमें ईश्वरीय ज्ञान वेद के सत्य वेदार्थ, जो ज्ञान व विज्ञान से पूर्ण हैं, उपलब्ध हैं। वेदों के सभी सिद्धान्त

व मान्यतायें ज्ञान व विज्ञान से युक्त हैं। अतः सत्य एवं विद्या से युक्त वेदों का ही प्रचार विश्व में होना चाहिये और संसार के सभी मनुष्यों को वेदों की मान्यताओं को स्वीकार करना चाहिये। अनेक कारणों से ऐसा हो नहीं रहा है। इसका कारण मत-मतान्तरों के लोगों के अपने हित व अहित हैं। इसी कारण से सद्धर्म वेदमत के प्रचार-प्रसार व स्वीकार करने कराने में बाधायें आती हैं। सभी मनुष्यों का कर्तव्य है कि वह सत्य को अपने प्रयत्न व पुरुषार्थ से जानें व सत्य का ग्रहण तथा असत्य का त्याग करें। इसका कारण यह है कि सत्य को जानने व ग्रहण करने से ही मनुष्य की आत्मा व जीवन की उन्नति होती है। अविद्या से मनुष्य की आत्मा व जीवन की उन्नति कदापि नहीं होती। अतः अविद्या व असत्य को छोड़ना ही सभी मनुष्यों के लिये श्रेयस्कर होता है। इसका समाधान यह है कि सभी मनुष्य अपने मत में स्थित रहकर भी वेद व वैदिक साहित्य का अनिवार्य रूप से पूर्ण निष्पक्षता के साथ अध्ययन करें। उनकी आत्मा को जो सत्य प्रतीत हो उसका निर्भीकता से ग्रहण तथा जो न हो उसका त्याग करें।

हम यदि वेद व वैदिक साहित्य को पढ़ेंगे ही नहीं, केवल अपने मत के ग्रन्थों को ही पढ़ेगे, तो हम विद्या व सत्य ज्ञान को प्राप्त नहीं हो सकते। मनुष्य जीवन की सफलता सत्य को जानने व उसका आचरण करने में ही है। इसी से हम सद्कर्म करते हुए असद् कर्मों से प्राप्त होने वाले दुःखों से मुक्त हो सकते हैं। वेदों के अनुसार आचरण करने से ही मनुष्य सुख व ऐश्वर्य को प्राप्त होता है और ईश्वर की उपासना व भक्ति सहित अग्निहोत्र यज्ञ एवं सदाचार पूर्वक जीवन व्यतीत कर मोक्ष का अधिकारी भी बनता है। वेदानुसार उपासना करने से ही मनुष्य को ईश्वर व आत्मा का साक्षात्कार वा प्रत्यक्ष भी होता है। अतः सभी मनुष्यों को अपने हित में मत-मतान्तरों का वैदिक सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर निष्पक्ष होकर अध्ययन करना चाहिये। ऐसा करके ही वह सत्य मत को प्राप्त हो सकते हैं। यदि हमने अपने इस वर्तमान मनुष्य जन्म में सत्य को न जाना और उसे अपने जीवन में धारण नहीं किया तथा इसके विपरीत असत्य व अविद्या में प्रवृत्त रहे तो इसका परिणाम हमें दुःख व परजन्म= मृत्यु के बाद दूसरे जन्म व जन्मान्तरों में मनुष्य जन्म में होने वाले सभी सुखों आदि से वंचित होना होगा। पूर्ण सम्भव है कि हमें मनुष्य जन्म न मिलकर किसी निम्न पशु-पक्षी आदि योनि में जन्म मिले जहाँ दुःख अधिक तथा सुख कम होते हैं। ईश्वर ने हमें कर्म करने की स्वतन्त्रता दी है। इस स्वतन्त्रता का हमें सदुपयोग करना है न कि दुरुपयोग। सदुपयोग से लाभ तथा दुरुपयोग से हानि होगी। सत्यासत्य का निर्णय न करने व सत्य को स्वीकार न करने का दण्ड तो सृष्टि के नियन्ता से सबको अवश्य ही मिलेगा। ईश्वर न्यायकारी है। वह सब जीवों के सभी कर्मों का साक्षी होता है। न्यायाधीश की भाँति वह किसी के पाप कर्मों को कदापि क्षमा नहीं करता। वहाँ किसी आचार्य व गुरु की सिफारिश भी नहीं चलती। अतः हम जो व जैसा कर्म करेंगे उसके अनुसार ही उसके फल भोगने के अधिकारी होंगे। विद्वानों व आचार्यों का मुख्य कर्तव्य है कि वह सत्य व असत्य का निर्णय कर स्वयं सत्य को स्वीकार करें तथा अपने अनुयायियों को भी ऐसा ही करने की प्रेरणा करें।

- मनमोहन कुमार आर्य
196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001
चलभाष- 09412985121

❑❑❑

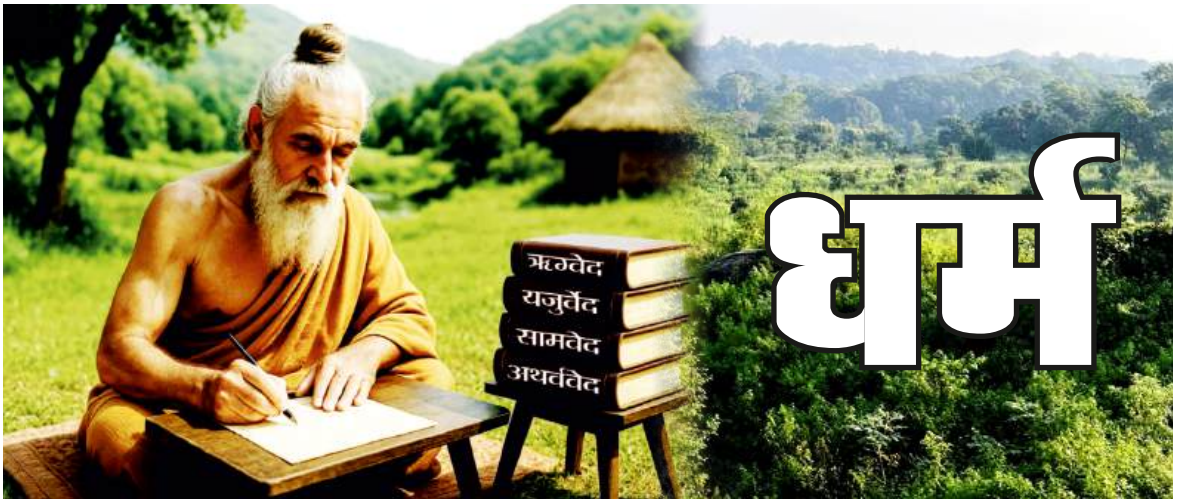


## १.महत्व

धरती पर ७५० करोड़ मानव आबादी में एक व्यक्ति भी ऐसा नहीं है जो धर्म से अछूता हो। जो किसी धर्म को मानते हैं, वे उसका प्रचार-प्रसार करते हैं, जो नहीं मानते वे धर्म से दूर रहने का प्रचार करते हैं। मृत्यु होने पर सब कुछ छूट जाता है, केवल धर्म साथ जाता है। धर्म के नाम पर संघर्षों में हुआ जान-माल का नुकसान प्राकृतिक आपदा, महामारी और युद्धों में हुए जान-माल के मुकाबले कहीं ज्यादा हैं। कहीं ज्यादा ढोंग पाखण्ड व अन्धविश्वास फैला हुआ है। तो धर्म को मिटा दिया जाये क्या? धर्म को मिटाना ऐसा तो नहीं जैसे शरीर के किसी अंग को ठीक करने की जगह उसे काट कर अलग कर देना। उपरोक्त तथ्य हमें विवश करते हैं कि धर्म क्या है, इसे ठीक से समझा जाये।

## २.परिभाषा

धर्म ग्रन्थों में, दार्शनिकों ने, धर्मगुरुओं ने धर्म की बहुत सी परिभाषायें दी हैं। कुछ परिभाषायें नीचे दी जा रही हैं-

(i) **धर्मो धारयते प्राजः।** धर्म से प्रजा का धारण होता है अर्थात् धर्म प्रजा पालन की व्यवस्था देता है।

(ii) **अधर्मेण पाद्यते समूलम विनश्यति-** धर्म का पालन न करने से पूरी तरह विनाश हो जाता है।

(iii) **सुखस्य मूलम धर्मः।** धर्म सुख का मूल है, साधन है।

(iv) **यस्य तर्केण अनुसन्धते स धर्मः।** जिसका तर्क से अनुसंधान हो, अर्थात् जो तर्कसंगत है वह धर्म कहलाता है।

(v) **धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।** धर्म का नाश करने से नाश हो जाता है और धर्म की रक्षा करने से रक्षा होती है। इस प्रकार की और भी बहुत सारी परिभाषायें हैं। इन सब परिभाषाओं में किसी सिद्धान्त या नियम का मर्यादा पूर्वक पालन करने को धर्म कहा है।

(ख) (i) **यतो अभ्युदय निश्रेयस सिद्धि स धर्मः।** जिससे लोक-परलोक सुधरे वह धर्म है।

(ii) **धार्यते इति धर्मः।** धारण करने योग्य को धारण करना धर्म है। क्या धारण करने योग्य है, आगे कहा- धृति, क्षमा, दमोऽस्तयं, शौचम्, इन्द्रियनिग्रह, धीर्विद्या, सत्यम्, अक्रोध दशकं धर्मं लक्षणम्। धैर्य, क्षमा, संयम, चोरी न करना, बाह्य व आन्तरिक शुद्धि, इन्द्रियों को वश में रखना, स्वाध्याय, सत्य आचरण क्रोध न करना आदि गुण धारण करने योग्य है। इस प्रकार की और भी बहुत परिभाषायें हैं। इन सब में किसी कर्तव्य पालन का निर्देश है। धर्म के लक्षणों में उन गुणों का वर्णन है। जिनके धारण करने से कर्तव्य पालन हो सकता है। कर्तव्य पालन से ही लोक-परलोक का सुधार होता है।

(ग) (i) **अहिंसा परमो धर्मः** किसी भी प्राणि को अकारण हानि न पहुँचाना।

(ii) **आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।** जो व्यवहार आपको अच्छा नहीं लगता वैसा व्यवहार दूसरों के साथ न करें। सभी प्राणियों को अपने जैसा समझें।

(iii) **मातृवत् परदारेषु परद्रव्येसु लोष्टवत् पश्यन्ति सः पण्डितः।**

(iv) **आत्मवत् पश्यन्ति सर्व भूतेषु।**

धर्म की इन परिभाषाओं में मानव के मूल स्वभाव के अनुसार व्यवहार करने की बात कही गई है।

आप वेद, दर्शन, उपनिषद्, किसी भी धर्म ग्रन्थ, दार्शनिक, धर्मगुरु कहीं भी जाएं दुनिया का कोई साहित्य पढ़ें, धर्म की परिभाषा में किसी सिद्धान्त-नियम कर्तव्य पालन व मानव के मूल स्वभाव अनुसार व्यवहार से हटकर आपको कोई परिभाषा नहीं मिलेगी अर्थात् नियम कर्तव्य व मूल स्वभाव से हटकर धर्म की कोई परिभाषा हो ही नहीं सकती।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उपरोक्त तीनों अंगों को मिलाकर धर्म की संक्षिप्त, सटीक व सारगर्भित परिभाषा दी है जो विश्व साहित्य में अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगी। ऋषि कहते हैं- **'सत्याचरण ही धर्म है।'** नियमों का पालन सत्याचरण है क्योंकि नियम-सिद्धान्त सत्य होते हैं। सत्याचरण के बिना कर्तव्य पालन सम्भव नहीं और प्रत्येक मानव अपने साथ सत्य का व्यवहार ही चाहता है।

## 3. धर्म एक या अनेक

सभी मनुष्यों के लिए नियम या सिद्धान्त एक जैसे, कर्तव्य (स्वयं के प्रति, परिवार के प्रति, समाज व राष्ट्र के प्रति) एक जैसे और धर्म नियम-सिद्धान्त, कर्तव्य पालन व मूल स्वभाव अनुसार आचरण का नाम है, तो मानव मात्र का धर्म एक ही होगा, दूसरा-तीसरा-चौथा अर्थात् एक के अतिरिक्त दूसरा धर्म नहीं हो सकता।

## 4. एक धर्म कौनसा

दुनिया में प्रचलित सभी धर्म अपने को सर्वश्रेष्ठ या मानव मात्र का धर्म होने का दावा करते हैं और यह मानते हैं कि सभी मानव उनका धर्म अपना लें तो विश्व कल्याण हो जावे। सभी धर्मों में मानव मात्र का धर्म होने का निर्णय कुछ कसौटियों या मापदण्डों के आधार पर किया जाना चाहिए।

किसी भी धर्म को मानव मात्र का धर्म होने के लिए निम्न कसौटियों पर खरा उतरना चाहिए।

(i) वह धर्म मानव धर्म कहलायेगा जो तब से है, जब से मानव धरती पर आया अर्थात् **धर्म की शुरूआत मानव के साथ होनी चाहिए।** सभी तथाकथित धर्मों का इतिहास तीन-चार हजार वर्ष से पुराना नहीं है जबकि मानव धरती पर करोड़ों वर्षों से है। तो इस कसौटी पर जिनको धर्म कहा जाता है (पारसी, यहूदी, बौद्ध, जैन, इसाई, मुस्लिम, सिख, हिन्दू आदि) कोई खरा नहीं उतरता।

(ii) उन बातों को धर्म स्वीकार किया जायेगा जो सृष्टि नियमों के विरुद्ध न हों। प्रचलित सभी धर्मों में बहुत सी बातें ऐसी हैं जो सृष्टि नियमों से मेल नहीं खातीं। सो इस कसौटी पर भी सभी धर्म खड़े नहीं उतरते हैं।

(iii) वहीं बातें धर्म कहलायेंगी जो सार्वभौमिक, सार्वकालिक और सार्वजनीन अर्थात् सभी स्थानों, प्रत्येक समय (भूत-वर्तमान-भविष्य) और प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान हों। इस कसौटी पर भी वर्तमान तथाकथित धर्म पूरा नहीं उतरते।

(iv) वही धर्म मानव धर्म कहलाने का अधिकारी है जिसमें मानव जीवन के सभी क्षेत्रों (सामाजिक, वैज्ञानिक, आर्थिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक आदि) के दिशा-निर्देश हों क्योंकि धर्म का उद्देश्य मानव जीवन को सुखी व सफल बनाना है जिसके लिए प्रत्येक प्रकार का मार्गदर्शन आवश्यक है। वर्तमान में जिनको धर्म माना जा रहा है, वहाँ सभी क्षेत्रों के दिशा-निर्देश उपलब्ध नहीं हैं।

(v) वही धर्म सभी के लिए मान्य होगा जहाँ मानव मानव के बीच भेदभाव न किया गया हो अर्थात् धर्म की बातें पक्षपात रहित हों। इस कसौटी पर भी वर्तमान धर्म पूरे नहीं उतरते।

तो वर्तमान के धर्म (पारसी, यहूदी, जैन, बौद्ध, इसाई, मुस्लिम, सिख, हिन्दू आदि) मानव मात्र का धर्म होने की योग्यता नहीं रखते। **इन सभी कसौटियों पर केवल वेद ही खरा उतरता है तो वेद के अनुसार आचरण करना ही एक मात्र मानव धर्म है।** इसे आप वैदिक धर्म कह सकते हैं।

## 5. तो वर्तमान धर्म क्या है ?

वर्तमान में जिनको धर्म कहा जा रहा है, ये धर्म नहीं है, ये मत-पन्थ हैं। अपने समय में, अपने लोगों (स्थान विशेष) के लिए जो ठीक लगा वे बातें किसी महापुरुष

ने कह दी। उन बातों को स्थानीय लोगों ने मानना आरम्भ कर दिया। ये बातें किसी महापुरुष विशेष का मत (विचार, मान्यताएँ) या तो इनके मानने वालों का यह मत था और इस मत को मानने वालों का एक समूह बना उनको पन्थ कहा गया। इस प्रकार वर्तमान

के सभी धर्म, धर्म न होकर अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग समय में अलग-अलग महापुरुषों के मत रहे हैं। इन मतों की बातें सार्वभौमिक (सभी स्थान) सार्वकालिक (सभी स्थानों में) और सार्वजनीन (सभी मनुष्यों के लिए समान) न होने के कारण ये मत हैं, धर्म नहीं हैं।

### 6. क्या मत पन्थों की बातें ठीक नहीं हैं?

भिन्न-भिन्न मत-पन्थों में जो बातें ठीक हैं वे सब वेद से ली हुई हैं और जो बातें ठीक नहीं हैं वे उनकी अपनी हैं। ऐसा मानने के दो आधार हैं। पहले तो यह कि वेद सबसे पहले से हैं, मत-पन्थ तो बहुत बाद में बने हैं, तो बाद वाला पहले वाले से लेगा न कि पहले वाला बाद वाले से लेगा। दूसरी बात यह है कि **एक भी बात जो जन कल्याण की है, वह किसी मत-पन्थ में है और वेद में नहीं है, ऐसा नहीं है।** इसका मतलब हुआ मत-पंथों की जो भी ठीक बातें हैं वह वेद से ली हुई हैं।

### 7. क्या सभी मत–पन्थों को ठीक माना जा सकता है?

सभी मत-पन्थ (तथाकथित धर्म) ठीक नहीं हो सकते क्योंकि ठीक बातों में विरोध नहीं होता। यदि सभी प्रचलित तथाकथित धर्मों को ठीक मानें तो उनमें किसी प्रकार का विरोध नहीं होना चाहिए, किन्तु हम विरोध देख रहे हैं। मत-पन्थों के परस्पर संघर्ष का कारण विरोध होना ही है। तो यह फार्मूला देना कि सभी धर्म बराबर हैं, ठीक हैं, हमें सभी का बराबर सम्मान करना चाहिए, सर्वधर्म सम्भाव रखना चाहिए, इससे शान्ति बनी रहेगी, ये बातें कोई तार्किक आधार नहीं रखती।

### 8. विश्व शान्ति की शर्त

विरोध संघर्ष को जन्म देता है और संघर्ष अशान्ति लाता है। इसके विपरीत समान विचार तालमेल पैदा करता है जिसका परिणाम शान्ति है। विश्व स्तर पर धार्मिक एकता केवल वेद के अनुसार चलने से सम्भव है। जब वैचारिक भिन्नता समाप्त हो जायेगी तो संघर्ष हट जायेगा और शान्ति स्थापित होगी। जब तक मत पन्थ और विरोधी मान्यतायें रहेंगी विश्व शान्ति सम्भव नहीं होगी।

### 9. क्या कभी वैदिक स्तर पर वैदिक धर्म रहा है?

धरती पर करोड़ों वर्षों से मानव रह रहा है। भिन्न मत पन्थों का इतिहास चार हजार वर्ष से पुराना नहीं है, तो क्या चार हजार वर्ष पहले कोई धर्म नहीं था? क्या मानव इतने लम्बे समय तक बिना धर्म के रहता आया था? यदि यह मान लें कि कोई धर्म नहीं था तो बाद में धर्म की आवश्यकता क्या पड़ गई? यह प्रश्न तो किया जा सकता है कि यदि दीर्घकाल तक धरती पर वैदिक धर्म रहा था, तो बाद में और वर्तमान समय आने तक, वैदिक धर्म लोप क्यों हो गया? वैदिक धर्म के पतन का ऐतिहासिक कारण है, और वह है महाभारत का युद्ध। महाभारत युद्ध में बहुत योद्धा मारे गए, राज्य व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गयी जिसके परिणामस्वरूप वेद के पठन पाठन का कार्य शिथिल हुआ। वेद का अध्ययन न होने या पर्याप्त न होने से वेद की समझ विकृत हुई। वेद की समझ विकृत होने के कारण मत-पन्थों का आरम्भ होना सम्भव हुआ। वर्तमान में भी हम देख रहे हैं कि धर्म की ठीक समझ न होने से नये-नये मत-पन्थ तेजी से बढ़ रहे हैं और यही कारण है कि वैज्ञानिक उन्नति के दौर में भी ढोंग-पाखण्ड, अन्धविश्वास बढ़ रहे हैं। महाभारत युद्ध को पाँच हजार वर्ष हुए हैं और सभी मत-पन्थ चार हजार वर्ष से कम पुराने होने का मतलब है सभी महाभारत के बाद वैदिक समझ विकृत होने के परिणाम हैं।

### 10. क्या फिर से वैदिक धर्म मानव धर्म बन सकता है?

मानव मात्र का धर्म वैदिक धर्म पुनः बन सकता है।

इसके दो आधार हैं। पहला आधार तो कार्य-कारण का सिद्धान्त है। कार्य-कारण के सिद्धान्तानुसार यदि कारण रहता है तो कार्य होगा और कारण हटा देंगे तो कार्य नहीं होगा। वैदिक धर्म के पतन का कारण वेद की समझ विकृत होना था, वेद का पठन-पाठन न होना, वैदिक सिद्धान्तों की ठीक जानकारी रखने वाले विद्वानों, शोधकर्त्ताओं का न होना था। अब यदि इस कारण को हटा देवें अर्थात् वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी बढायें, विद्वान्-शोधकर्त्ता बढ़ायें और इसके लिए वेद के पठन-पाठन की उचित व्यवस्था करें तो

इसकी मान्यता बढ़ती चली जायेगी।

तर्कसंगत बात को मानना पड़ता है इस तथ्य का प्रत्यक्ष हम किसी वैज्ञानिक संगोष्ठी (Science Conference) में कर सकते हैं। किसी वैज्ञानिक संगोष्ठी में १५०-२०० वैज्ञानिक भिन्न-भिन्न देशों के और भिन्न-भिन्न मत-पन्थों को मानने वाले बैठे हैं और एक वैज्ञानिक अपना शोध-पत्र पढ़ रहा है, तो क्या श्रोताओं में से कोई वैज्ञानिक उठकर यह कहता है कि आप मुस्लिम वैज्ञानिक हैं ओर मैं हिन्दू वैज्ञानिक हूँ या आप पाकिस्तानी वैज्ञानिक हैं और मैं अमेरिकी हूँ इसलिए मैं आपकी बात नहीं मान सकता? ऐसा विज्ञान संगोष्ठी या किसी भी वैज्ञानिक चर्चा में नहीं होता। **वहाँ तो जो बात तर्कसंगत है उसको सभी मानने को बाध्य हैं चाहे वे किसी देश, मत-पन्थ या किसी भी समाज से सम्बन्ध क्यों न रखते हों।** इसके विपरीत यदि बात तर्कसंगत नहीं है तो उसका विरोध उसी देश का उसी मत-पन्थ का वैज्ञानिक कर देगा। यह सूत्र ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में लागू होता है चाहे बात धर्म की हो, अर्थ की हो, राजनीति की हो या समाज की हो। इसी सूत्र को लेकर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदों की ठीक व्याख्या करके पाँच हजार वर्षों से चली आ रही वेद की विकृत व्याख्या को हटाकर वेद की पुनर्स्थापना की। स्वार्थ और जड़ता इस कार्य में सबसे बड़ा रोड़ा है। अंग्रेजों का स्वार्थ और हमारे देश के लोगों की जड़ता ने ऋषि के कार्य में बाधा डाली और ऋषि की हत्या कर दी गई। **ऋषि दयानन्द का स्वप्न वेद की स्थापना द्वारा विश्व में शान्ति स्थापित करने का था।** विश्व शान्ति का वास्तव में एक ही मार्ग है, वेद की स्थापना अर्थात् मानव मात्र का एक वैदिक धर्मी होना क्योंकि इससे विचार भिन्नता हटेगी, जिससे विरोध और संघर्ष हटेगा और परिणाम होगा शान्ति। तो हम सबका मानवीय कर्तव्य बनता है कि वेद की स्थापना के प्रत्येक प्रयत्न का समर्थन और सहयोग करना।

## 11. धर्म-निरपेक्ष संविधान

भारत के संविधान को धर्म निरपेक्ष संविधान बनाना निश्चित रूप से संविधान निर्माण कर्त्ताओं की धर्म के बारे में अज्ञानता थी। यदि वे धर्म की परिभाषा को ठीक समझते तो ऐसा कदापि नहीं करते क्योंकि धर्म नियम, कर्तव्य पालन या मूल स्वभाव के अनुसार व्यवहार करना है और कोई व्यक्ति, समाज या देश नियम का कर्तव्य पालन से निरपेक्ष (उदासीन) कैसे रह सकता है। हमें समस्याओं से मुक्ति पानी है तो धर्म की परिभाषा ठीक समझकर उसे लागू करना ही होगा, अन्य कोई मार्ग नहीं है। ईश्वर करे हम ठीक समझ की ओर बढ़ सकें।

**- डॉ. भूपसिंह**
**चलभाष-9992334407**

❑❑❑

# शरद ऋतु का आहार-विहार

वर्षा ऋतु और सर्दी (हेमन्त ऋतु) के मध्य के दो महिने का समय शरद ऋतु का होता है। भारतीय पंचाग के अनुसार आश्विन और कार्तिक ये दो महिने तथा पाश्चात्य कैलेण्डर के अनुसार १६ सितम्बर से १५ नवम्बर तक समय इस ऋतु के अन्तर्गत आता है।

इस समय वर्षा बीत चुकी होती है, आकाश से बादल छंट चुके होते हैं, आकाश स्वच्छ व निर्मल हो जाता है। न ज्यादा गर्मी पड़ती है और न ज्यादा सर्दी। मौसम बहुत सुहावना होता है। वर्षा ऋतु के उपद्रवों के हट जाने से लोग बड़े उत्साह से इस ऋतु का स्वागत करते हैं। वर्षा ऋतु से दूषित घरों की सफाई रंगाई-पुताई कर सजावट की जाती है। जीवाणु नाशक द्रव्यों से युक्त हवन सामग्री से यज्ञ व धूपन आदि के द्वारा लोग घरों को विसंक्रमित करते हैं। आर्यों का प्रसिद्ध पर्व दशहरा व दीपावली इसी ऋतु में आते हैं।

आकाश साफ व निर्मल होने से सूर्य की तीव्र किरणें पृथ्वी पर पड़ती है। वर्षा ऋतु में संचित पित्त गर्मी पाकर प्रकुपित हो जाता है अतः इस मौसम में पैत्तिक व्याधियाँ ज्यादा होती हैं। हठयोगी लोग षट्कर्मों द्वारा शरीर की शुद्धि कर पित्त का विर्हरण इस ऋतु में किया करते हैं। यह ऋतु प्राणायाम करने के लिए अत्युत्तम है। जो लोग प्राणायाम नहीं करते उनके लिए प्राणायाम करना आरम्भ करने के लिए यह ऋतु बहुत लाभदायक है।

यह ऋतु उष्ण व पित्तकारक है अतः इसमें पित्तशामक आहार-विहार का सेवन करना चाहिए। इस समय की तेज धूप से बचना चाहिए, इससे पित्तप्रकोप होने की सम्भावना रहती है। अधिक मात्रा में भोजन नहीं करना चाहिए। इसमें शीतल, मधुर, तिक्त व गर्मी को शान्त करने वाला आहार सेवन करना चाहिए। सांठी चावल, गेहूं, जौ, घी, दूध, खीर आदि का सेवन लाभदायक है। अमरूद, सिंघाड़ा, टमाटर, पालक, गाजर, लौकी आदि का प्रयोग करना चाहिए। गन्ने का रस इस मौसम में पीना चाहिए। नीम्बू की शिंकजी पीना भी श्रेष्ठ है।

लाल मिर्च, तेल, खटाई, आचार, गर्म मसाले, तली हुई खाद्य वस्तुएँ- कचौरी, समोसे, पकोड़े, चाय कॉफी आदि गर्म वस्तुओं का सेवन इस ऋतु में त्याज्य है। यदि चाय पीनी हो तो तुलसी की चाय का सेवन करें। दही का सेवन भी इस ऋतु में नहीं करें।

पित्त विरेचन के लिए यह ऋतु बहुत अच्छी है। इसके लिए आंवला चूर्ण या त्रिफला चूर्ण में मिश्री मिलाकर ले सकते हैं। इस समय खट्टी डकारें, अम्लपित्त (एसीडिटी) गले से पेट तक जलन होने की सम्भावना रहती है, इसके लिए सलाद में खीरे

का ज्यादा सेवन करे। ककड़ी के रस में हरे धनिये का रस मिलाकर पीवें या सूखे धनिये को दो चम्मच की मात्रा में रात्रि में भिगोकर रख देवें, प्रातः मसलकर, छानकर मिश्री मिलाकर पीवें। इस मौसम में प्रायः सर्दी जुकाम होता रहता है। इसके लिए पन्द्रह तुलसी के पत्ते १/४ चम्मच सैंधा नमक, १/४ चम्मच सौंठ व पाँच पिसी हुई काली मिर्च एक गिलास पानी में उबालकर, छानकर सोते समय पीने से सर्दी जुकाम ठीक हो जाता है।

इस ऋतु में प्रातः जल्दी उठकर खुली हवा में भ्रमण करना व प्राणायाम करना बहुत लाभदायक है। उचित आहर-विहार का ध्यान रखने से आपके लिए यह शरद ऋतु बहुत आनन्ददायक होगी।

**लेखक- वेदमित्र आर्य**
**सेवानिवृत्त आयुर्वेदिक चिकित्सक**
**१३ श्री राम नगर, से.-६, हिरणमगरी, उदयपुर**

❑❑❑

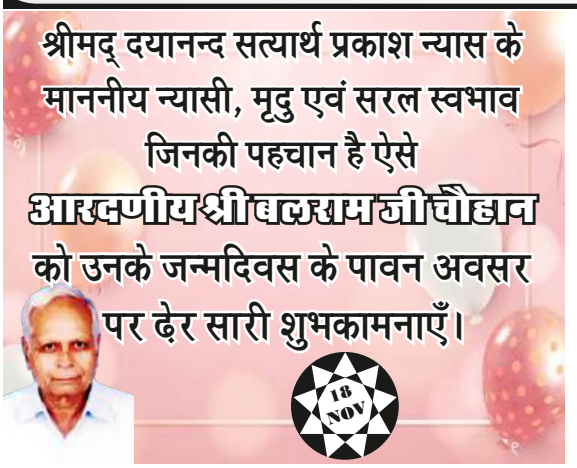


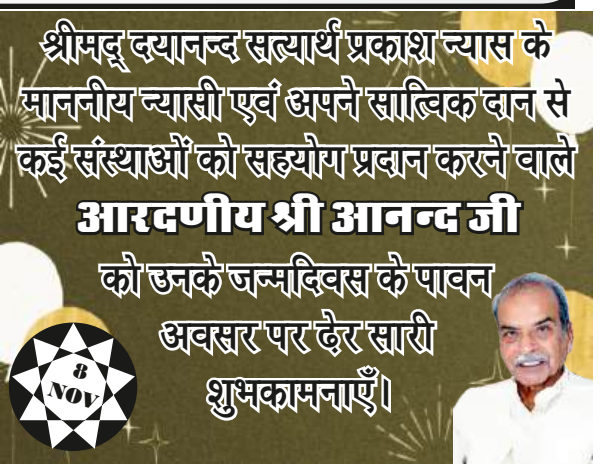


## पाँच सितारा होटल में गूँजे वेद मंत्र

### वैदिक पद्धति से कराया गया पाणिग्रहण संस्कार

"लोगों का कहना था कि किसी महिला पुरोहित से पहली बार यह पवित्र अनुष्ठान देखने का अवसर मिला।"

स्थानीय सुप्रसिद्ध लीला पैलेस होटल में दिनांक २७ सितम्बर २०२५ को गुड़गाँव निवासी संजीव सागर के पुत्र चि. ध्रुव और अटलान्टा; यूएसए निवासी संजय बावा की सुपुत्री सौ. निकिता का विवाह बड़े ही भव्य रूप में सम्पन्न हुआ। **विवाह संस्कार उदयपुर की प्रख्यात महिला पुरोहित श्रीमती सरला गुप्ता द्वारा कराया गया।** संस्कार से उभय पक्ष के समस्त सदस्य अत्यन्त प्रसन्न हुए और श्रीमती सरला गुप्ता की प्रेरणा पर **स्थानीय दयानन्द कन्या विद्यालय, जिसमें कि गरीब परिवारों की छात्राओं को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है, की ३० छात्राओं की मासिक फीस देने का निर्णय चि. ध्रुव के मामा जी के द्वारा हुआ।** इस अवसर पर होटल के जो अधिकारी मौजूद थे उन्होंने कहा कि हमनें सैकड़ों विवाह देखे हैं परन्तु इतने सार्थक रूप में विवाह के स्वरूप को प्रथम बार देखा। विवाह संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हो तो बहुत अच्छा हो। गृहस्थ में प्रवेश करने वाले वर-वधू को विवाह की सफलता के लिए बहुत सारे स्वर्णिम सूत्र उपलब्ध हो जाते हैं। इस अवसर पर श्रीमती सरला गुप्ता के पति श्री राजकुमार गुप्ता भी उपस्थित रहकर सहयोग प्रदान करते रहे।

# कहानी दयानन्द की

गतांक से आगे .....

# कथा सरित

इस भाग में हम अत्यन्त संक्षेप में सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण के लेखन पर प्रकाश डालेंगे। राजा जयकृष्ण दास जी डिप्टी कलेक्टर थे। स्वामी जी से बहुत प्रभावित थे। उन्हीं ने स्वामी जी को निवेदन किया कि आपके उपदेश अगर पुस्तक के आकार में छप जाएँ तो जनता का बड़ा उपकार होगा, क्योंकि आप सर्वत्र नहीं जा सकते। अन्य जगहों के लोग भी आपके मन्तव्यों के पुस्तकाकार छप जाने से लाभान्वित होंगे और आपके विचार, उपदेश भी स्थाई हो जाएँगे। स्वामी जी के स्वीकार करने पर राजा साहब ने पुस्तक लिखाने-छपाने का सारा भार अपने ऊपर ले लिया। राजा साहब ने पुस्तक लिखने के लिए एक महाराष्ट्रियन पण्डित चन्द्रशेखर को तय किया और १२ जून सन् १८७४ से सत्यार्थ प्रकाश की रचना आरम्भ हो गई। स्वामी जी बोलते जाते थे, चन्द्रशेखर लिखते जाते थे। यही सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण सन् १८७५ में छपकर तैयार हुआ। सत्यार्थ प्रकाश की विशेषता जहाँ इसकी विषय वस्तु है वहीं धारा प्रवाह प्रवचन शैली भी है। कुछ ऐसे बिन्दु जो तब तक किसी भी भारतीय के मन मस्तिष्क में उपस्थित भी नहीं हुए थे उनको स्वामी जी ने खुलकर उठाया था। **जैसे नमक और जंगलात की लड़कियों पर 'कर' का स्वामी जी ने विरोध किया** और इसी प्रकार न्याय व्यवस्था गरीबों को भी सुलभ हो इसके लिए इस बात की आलोचना भी की कि स्टाम्प ड्यूटी बहुत ज्यादा लगा रखी है। तो कई अर्थों में यह प्रथम संस्करण अति विशिष्ट था। परन्तु लेखक ने स्वामी जी के साथ विश्वासघात किया। कुछ ऐसी बातें सत्यार्थ प्रकाश में डाल दीं जिनका समर्थन स्वामी जी ने कभी नहीं किया, जैसे श्राद्ध-तर्पण और श्राद्ध में मांस के पिण्ड देना इत्यादि। स्वामी जी के संज्ञान में जब यह बात आई तो उन्होंने इसका खण्डन किया। क्योंकि लोग तब तक यह कहने लग गए थे कि स्वामी जी तो श्राद्ध तर्पण और मांसाहार के पक्षपाती हैं। राजा जयकृष्ण दास ने कहा था कि स्वामी जी को उस समय प्रूफ देखने का अवकाश नहीं था और स्वामी जी सभी लोगों पर विश्वास भी कर लेते थे इसलिए सम्भव है कि लेखक व मुद्रक द्वारा यह सब सत्यार्थ प्रकाश में छाप दिया गया हो। इस प्रकरण के सामने आने पर स्वामी जी ने निश्चय कर लिया कि सत्यार्थ प्रकाश को दोबारा लिखेंगे और अन्य ग्रन्थों के लेखन और मुद्रण के समय इस बात में सतर्कता रखेंगे कि उनमें कोई मिलावट न करने पाए।

स्वामीजी मुरसान होते हुए काशी पहुँचे। यहाँ सर सैयद अहमद खान से उनकी भेंट हुई। सर सैयद अहमद खान उन दिनों काशी में सब जज थे। उनके बंगले पर स्वामी जी के दो-तीन व्याख्यान भी हुए। इन्हीं सैयद साहब ने काशी के कलेक्टर मिस्टर शेक्सपियर से स्वामी जी को मिलवाया। सैयद अहमद खान के बंगले पर एक व्याख्यान वेदों के अपौरुषेयत्व पर हुआ। यहाँ स्वामी जी ने बाइबिल की उस प्रसिद्ध कथा का विखण्डन किया जिसमें यह कहा गया था कि बाबेल नगर के लोगों ने एक बार बहुत ऊँची मीनार बनानी प्रारम्भ की ताकि वे उस पर चढ़कर के खुदा से मिल सकें। अब बाइबल के परमेश्वर को भ्रम हुआ कि कहीं ये आसमान पर न चढ़ जाएँ तो उन्होंने उनकी भाषा में गड़बड़ पैदा कर दी। उसका परिणाम यह हुआ कि एक व्यक्ति

जोात कह रहा है वह किसी और भाषा में थी, दूसरा उसको समझ नहीं रहा। इसलिए ना तो उसका उत्तर दे पा रहा और नहीं उसके अनुसार काम कर पा रहा। इस कारण से वह सारा उनका काम व्यर्थ हो गया और आगे उन्होंने बुर्ज बनाना छोड़ दिया। अब यहाँ स्वामी जी ने चुटकी ली कि पहली बात तो जब सब संसार में एक भाषा थी तब कितना सुख होता होगा कि सब एक दूसरे की बातें समझते थे। तो परमेश्वर ने इस व्यवस्था को गड़बड़ करके कोई अच्छा काम तो नहीं किया, दूसरा आकाश या आसमान कोई ठोस पदार्थ नहीं है जिस पर कोई चढ़ जाएगा। इतनी सी बात क्या सृष्टि के रचयिता ईश्वर को पता नहीं थी और फिर उसको डर लगा। किन से डर लगा? जिनको उसने ही उत्पन्न किया था और आसमान पर चढ़कर के यह लोग खुदा से मिलने जा रहे थे, इससे यह भी पता चलता है कि बाइबल का ईश्वर सर्व व्यापक नहीं है, एक देशीय है। इस प्रकार से स्वामी जी हिन्दुओं की और अन्य मत-मतान्तरों की जितनी भी तर्क रहित मान्यताएँ थीं उनका खण्डन करते रहते थे। अब यहाँ एक पण्डित काशीनाथ शास्त्री भी बैठे हुए थे। उपरोक्त सारी वार्ता एक ईसाई पण्डित नीलकण्ठ से हो रही थी। नीलकण्ठ को अच्छा लगा बुरा लगा यह बात तो अलग है परन्तु काशीनाथ इस जुगत में था कि नीलकण्ठ से स्वामी जी हार जाएँ तो वह सब तालियाँ बजाएँ और प्रसन्नता जाहिर करें। अब आप इस मनः स्थिति को समझिए कि चाहे विधर्मी जीत जाए उस पर हम खुश हो जायेंगे पर जिससे हमारी ईर्ष्या है वह न जीते, वह हार जाए। यह मानसिकता आज भी हमें भारत वर्ष में देखने को मिलती है यह प्रशस्त नहीं है।

**प्रस्तुति- नवनीत आर्य, नवलखा महल, उदयपुर**

**साभार- देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय रचित 'महर्षि दयानन्द चरित'**

❑❑❑

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

**पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।**

**-सम्पादक**

## सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

**1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।**

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

**अशोक आर्य,** अध्यक्ष-न्यास | **भवानीदास आर्य,** मंत्री-न्यास | **डॉ. अमृत लाल तापड़िया,** संयुक्तमंत्री-न्यास

### वाल्मीकि जयन्ती पर किया प्रतिभाओं का सम्मान

### नवलखा महल में लघु नाटक 'समरसता का प्रकाश' का मंचन

अखिल भारतीय साहित्य परिषद् की ओर से वाल्मीकि जयन्ती के उपलक्ष में गुलाब बाग स्थित नवलखा महल में प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित हुआ। साथ ही स्वामी दयानन्द सरस्वती पर आधारित लघु नाटक 'समरसता का प्रकाश' का मंचन किया गया। परिषद् अध्यक्ष

आशा पाण्डे ओझा ने बताया कि अध्यक्षता श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष अशोक आर्य ने की। मुख्य अतिथि महन्त इन्द्रदेव दास, विशिष्ट अतिथि विनोद कुमार राठौड़, डॉ. मनीष श्रीमाली व कृष्णा कुमारी पानरवा थे। मुख्य वक्ता अशोक आर्य ने ज्ञान एवं संस्कारों की महत्ता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में आशीष सिसोदिया, शकुन्तला पालीवाल, संजय गुप्ता देवेश, डॉ. कामिनी व्यास रावल, डॉ. सरस्वती जोशी, डॉ. नम्रता जैन, चन्द्रकान्ता बंसल, दीपा पंत, ममता पानेरी, निर्मला शर्मा, हिमांशु, स्वाति शकुंत, मीनाक्षी पंवार, गौरीकान्त शर्मा सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। संचालन चंचल शर्मा ने किया। समारोह में नवीन छापरवाल, भव्यता चौहान, कनिष्का चौहान, भावना राठौड़, नरेन्द्र चनाल, शौर्य पंवार, नेहा कोहली, दिव्या पंवार, रितु लोढ़ा, अमित व्यास, प्रवर खण्डेलवाल, मानस जैन, प्रद्युम्न चौहान, सुखदेव सिंह राव, शुभिका कुंवर को सम्मानित किया गया।

### वेद मंत्र पाठ प्रतियोगिता सम्पन्न

६ अक्टूबर २०२५ को आर्य समाज हिरण मगरी सेक्टर-४, उदयपुर द्वारा संस्थापक प्रधान स्मृति शेष सुरेश चन्द्र गुप्ता की स्मृति में सोमवार को सम्पन्न वेदमंत्र पाठ प्रतियोगिता में कनिष्ठ वर्ग में दयानन्द कन्या विद्यालय और वरिष्ठ वर्ग में राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय सेक्टर-४ के दल विजेता रहे। समाज के प्रचार मंत्री डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने बताया कि समाज संरक्षक शारदा गुप्ता द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में कनिष्ठ वर्ग से १२ और वरिष्ठ वर्ग से १० विद्यालयों के ४६ विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक भाग लेकर सस्वर वेदमंत्र पाठ और उनका पद्य में हिन्दी अर्थ प्रस्तुत किया। पिछले २२ वर्षों से निरन्तर आयोजित की जा रही इस प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में ईश्वरीय ज्ञान वेदों के प्रति रुझान उत्पन्न करना है। समाजसेवी (पूर्व महाप्रबन्धक-हिन्दुस्तान जिंक) नरेश चन्द्र बंसल की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष अशोक आर्य, वैदिक विद्वान् राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य आचार्य सत्यप्रिय आर्य और सुखाड़िया विश्वविद्यालय की संस्कृत की व्याख्याता डॉ. सीमा शर्मा निर्णायक रहे। स्वागत उद्बोधन में आर्य समाज हिरण नगरी के संरक्षक प्रो. डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने कहा कि यह अन्तरविद्यालय स्तर पर प्रतियोगिता २२ वर्षों से आर्य समाज हिरण मगरी में आयोजित की जा रही है। विशिष्ट

अतिथि विजयलक्ष्मी बंसल ने प्रतिभागियों को सदैव सकारात्मक रह कर चुनौतियों का सामना करने का आह्वान किया। उनके द्वारा रचित जन-जन के लिए श्रीमद् भागवत गीता पुस्तिका और प्रमाण-पत्र सभी प्रतिभागियों को और सभी विजेताओं को विशेष पुरस्कार प्रदान किए गए। तीनों निर्णायक महानुभावों द्वारा प्रतिभागियों को वेदमंत्र पाठ में शुद्ध उच्चारण, वेद ज्ञान को जीवन के आचरण में लाने और प्रभावी प्रस्तुति कौशल हेतु महत्वपूर्ण सूत्र दिए। प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग में सेन्ट एंथोनी सीनियर सेकेंडरी स्कूल सेक्टर-४ की शिप्रा गुप्ता प्रथम, दयानन्द कन्या विद्यालय की कुन्दना रावत द्वितीय और गुरु नानक पब्लिक स्कूल की अमाया ओझा तृतीय स्थान पर रहे। वरिष्ठ वर्ग में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सेक्टर-४ की भूमिका कुमावत प्रथम और कृष्णा गर्ग तृतीय रही जबकि द्वितीय स्थान सेन्ट एंथोनी सीनियर सेकेंडरी स्कूल की अनवी मेहता ने प्राप्त किया। आरम्भ में गायत्री महामंत्र पट्टिका से स्वागत आर्य समाज हिरण मगरी के प्रधान भंवर लाल आर्य, उप प्रधान कृष्ण कुमार सोनी, उप मंत्री सरला गुप्ता और दयानन्द कन्या विद्यालय की मानद निदेशक पुष्पा सिंधी ने किया। आभार भाग्यश्री शर्मा ने ज्ञापित किया। संचालन वैदिक पुरोहित डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया। कार्यक्रम में दयानन्द कन्या विद्यालय की प्रधानाचार्य प्रेमलता मेनारिया, प्रीति चौहान, राजकुमार गुप्ता, डॉ. किरण शर्मा, रमेश चन्द्र जायसवाल, आनन्द राज माथुर, नवनीत भट्ट सहित बड़ी संख्या में विशिष्ट अतिथिगण उपस्थित रहे।

**- डॉ. भूपेंद्र शर्मा; प्रचार मंत्री-आर्य समाज हिरण मगरी सेक्टर ४, उदयपुर**


महर्षि वाल्मीकि प्रणीत प्रामाणिक राम चरित्र

भगवान श्री राम का प्रामाणिक जीवन चरित्र

प्रक्षेपों का सप्रमाण निराकरण

तर्क, बुद्धि, विज्ञान और इतिहास के आधार पर जानें, माने और अनुसरण करें भगवान श्री राम के पावन चरित्र का

Order Now Free Postage

Best seller from Acharya Prembhikshu

Hard Bound ₹320 Paper Back ₹250

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, गुलाब बाग, उदयपुर

Contact 9314535379

**मुनंबम वक्फ केसः 70 साल बाद उठा जमीन का विवाद और अदालत की सच्चाई**

केरल के एर्नाकुलम जिले का समुद्र किनारे बसा छोटा-सा इलाका मुनंबम हाल के वर्षों में एक बड़े जमीन विवाद का प्रतीक बन गया। यहाँ लगभग ६०० परिवार पीढ़ियों से रह रहे थे, जिनकी जमीनों पर अचानक २०१६ में वक्फ बोर्ड ने अधिकार जताया।

वक्फ बोर्ड का कहना था कि यह ४०४ एकड़ ज़मीन वर्ष १९५० में

मोहम्मद सिद्दीक़ सईद द्वारा 'धार्मिक वक्फ' के रूप में दान की गई थी, इसलिए अब भी वह 'वक्फ सम्पत्ति' है। दूसरी ओर स्थानीय लोगों ने कहा कि वह तो बस एक साधारण गिफ्ट डीड थी- धार्मिक नहीं। सात दशक तक बोर्ड ने कोई दावा नहीं किया, न ही किसी सरकारी रिकॉर्ड में इसे वक्फ बताया गया। मामला बढ़ते-बढ़ते केरल हाईकोर्ट तक पहुँचा। न्यायाधीशों की बेंचः Justice Sushrut Arvind Dharmadhikari और Justice V. M. Syamkumar ने १० अक्टूबर २०२५ को यह फैसला सुनाते हुए सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि अगर ऐसी मनमानी घोषणाएँ न्यायालय द्वारा मान ली जाएँ, जहाँ पुराने दस्तावेज़ों को आधार बनाकर बिना उचित प्रक्रिया से किसी भी संपत्ति को वक्फ घोषित किया जाए, तो भविष्य में 'ताजमहल, लाल किला, विधानसभा भवन, यहाँ तक कि यह स्वयं अदालत भवन' आदि को भी कोई व्यक्ति किसी दस्तावेज़ से वक्फ घोषित कर सकता है।

अदालत ने सारे दस्तावेज़ देखने के बाद कहा- **यह दान 'वक्फ' नहीं बल्कि 'गिफ्ट' था।** वक्फ बोर्ड ने ६९ साल बाद कानून का गलत उपयोग करते हुए यह दावा किया।

हाईकोर्ट के इस निर्णय से मुनंबम के सैकड़ों परिवारों ने राहत की साँस ली। अदालत ने कहा कि वे अपनी जमीन पर बने रहेंगे, और चाहें तो राज्य सरकार उस भूमि का अधिग्रहण कर उन्हें स्थायी स्वामित्व दे सकती है। यह केस एक मिसाल बन गया कि कानून का इस्तेमाल पुराने दस्तावेज़ों पर जबरन धार्मिक दावा करने के लिए नहीं किया जा सकता।

मुनंबम की यह कहानी सिर्फ जमीन की नहीं, बल्कि न्याय पर जनता के भरोसे की कहानी है, जहाँ सात दशक बाद भी अदालत ने कहाः **'सत्य ही सबसे बड़ा धर्म है, और अन्याय के खिलाफ देर से ही सही, न्याय मिलता है।'**

**डॉ. आनन्द गुप्ता सम्मानित**

उदयपुर नगर के प्रख्यात चिकित्सक एवं अरावली हॉस्पिटल, उदयपुर के अध्यक्ष डॉक्टर आनन्द गुप्ता को १४ अक्टूबर २०२५ को महाराजा

लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ और पंजाब के राज्यपाल महामहिम गुलाबचन्द जी कटारिया के सान्निध्य में 'मेवाड़ गौरव पुरस्कार-२०२५' से सम्मानित किया गया। डॉक्टर गुप्ता जहाँ आईएमए के प्रेसिडेंट हैं वहीं एक समाजसेवी के रूप में उनके कार्यों को सराहा जाता है। इस न्यास से भी उनके आत्मीय सम्बन्ध हैं। इस विशिष्ट अवसर पर जो सम्मान उनको प्राप्त हुआ है उसके लिए न्यास की ओर से और सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से उन्हें बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

**- अशोक आर्य, अध्यक्ष श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर**

**यह अत्यन्त गर्व का विषय है कि हमारे आर्य समाज के लिए हमारी महिला पुरोहित**

श्रीमती सरला गुप्ता जी को उनके समाजहित एवं धर्मकार्य के उल्लेखनीय योगदान हेतु आज 'फर्स्ट इण्डिया न्यूज' द्वारा आयोजित ''मेवाड़ गौरव सम्मान'' सीज़न-४ में सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री (ओडिशा) श्री कनक वर्धन सिंहदेव तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती संगीता कुमारी सिंहदेव, माननीय गुलाबचन्द कटारिया जी (राज्यपाल पंजाब) महाराजा लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ एंव महारानी निवृत्ति कुमारी जी तथा अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। 'आर्य समाज की प्रतिष्ठित महिला पुरोहित श्रीमती सरला गुप्ता जी को मेवाड़ गौरव सम्मान से सम्मानित किए जाने पर हार्दिक शुभकामनाएँ। आपका समर्पण, धर्म, सेवा और समाज उत्थान हेतु किया गया अनवरत प्रयास हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। इस गौरवपूर्ण क्षण पर आर्य समाज परिवार स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा है।

आपकी इस उपलब्धि के लिए नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से कोटिशः बधाई एवं मंगलकामना।

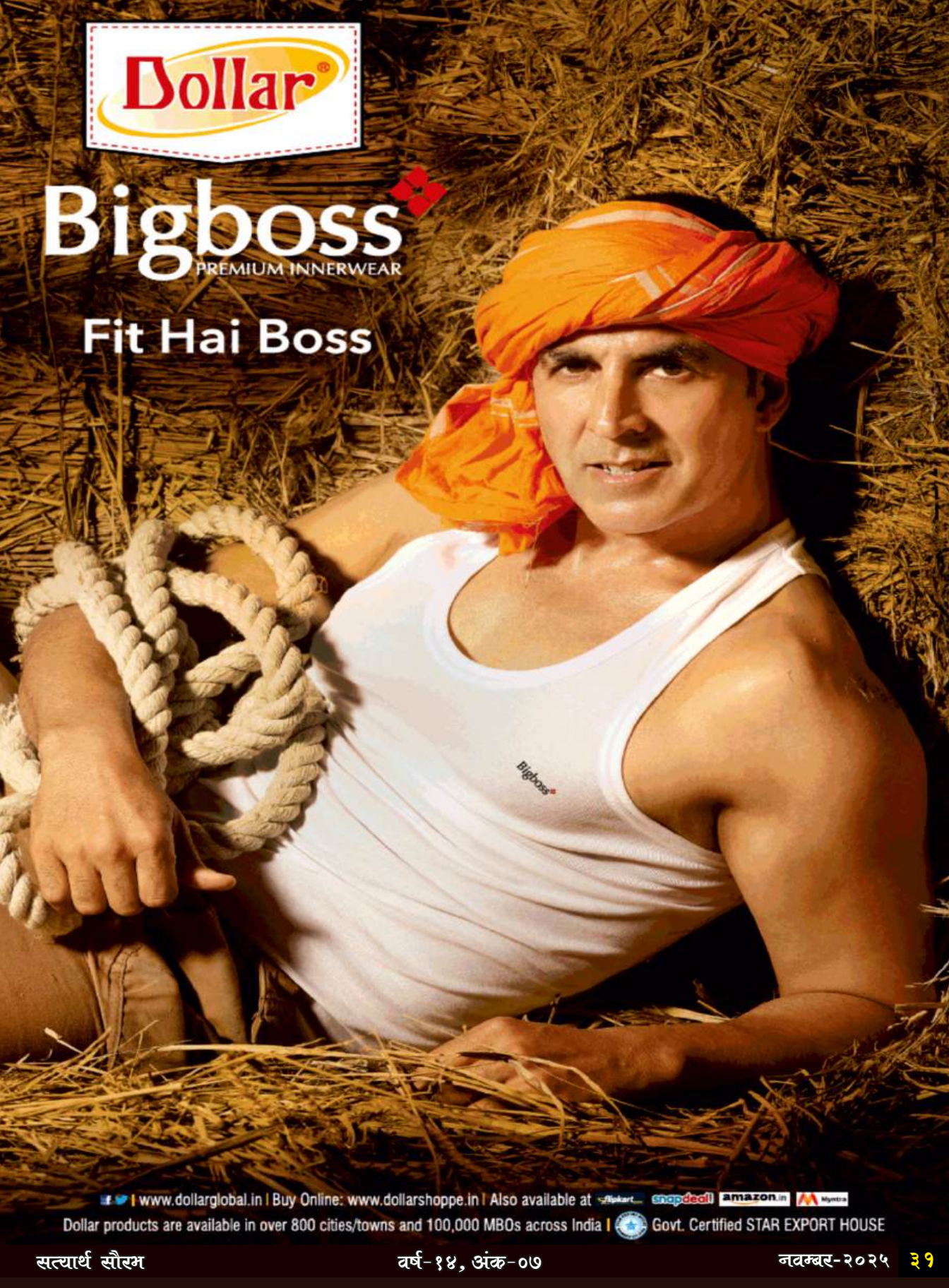

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at
amazon.in
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 November-2025 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

वैसे ही मन भी जड़ है, न उसको हर्ष, न शोक हो सकता है। किन्तु मन से हर्ष शोक दुःख-सुख का भोग जीव करता है। जैसे बहिष्करण श्रोत्रादि इन्द्रियों से अच्छे-बुरे शब्दादि विषयों का ग्रहण करके जीव सुखी-दुःखी होता है।

सत्यार्थ प्रकाश; नवम समुल्लास पृष्ठ २३३

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर